मार्च 2013

कश्मीर संदेश

हिन्दी कश्मीरी संगम



स्वामी विवेकानन्द की १५० वीं जन्मशती पर आयोजित समारोह में उनके कश्मीर भ्रमण विषय पर बोलते हुए प्रो. चमनलाल सप्रू, सभा की अध्यक्षता डॉ. कर्णसिंह ने की।



प्रख्यात कश्मीरी विद्वान प्रो. जयलाल कौल के व्यक्तित्व और कृतित्व पर बोलते हुए मुख्य वक्ता प्रो. चमनलाल सप्रू



कश्मीर संदेश (त्रैमासिक)

साहित्य, संस्कृति एवं भाषा के संरक्षण-संवर्द्धन को समर्पित अनुष्ठान 'हिन्दी कश्मीरी संगम' का प्रकाशन

अंक-3 मार्च 2013/ चैत्र सप्तर्षि संवत 5089 सहयोग राशि ₹ 125 वार्षिक



❖ सम्पादकीय कार्यालय ❖
ए-102, एस.जी.इम्प्रेशन,
(निकट मेवाड इन्स्टीच्यूट)
सेक्टर-4 बी, वसुन्धरा,
गाज़ियाबाद-201012
(एन.सी.आर.,दिल्ली)
मो. 09953390488
ई-मेल :
beenadeepakbudki@gmail.com



प्रधान कार्यालय
13-बी, ई-3, शताब्दी विहार,
सेक्टर-52, नोएडा
(उ.प्र.)-201307
अध्यक्ष मो. : 09871481177



आवरण : वसन्तागमन पर निशात बाग श्रीनगर कश्मीर में बादाम के पेड़ों में 'फुलय' (शगूफों) की बहार

इस अंक में....

"कश्मीर सन्देश" के लिए वार्षिक शुल्क, आजीवन सदस्यता शुल्क अथवा विशेष सहयोग धनराशि केवल हिन्दी कश्मीरी संगम के नाम से चेक/बैंक ड्राफ्ट बनाकर भेजें – सचिव



कश्मीरी के लिए देवनागरी लिपि

कश्मीर की प्राचीन लिपि शारदा है। इसी में संस्कृत तथा बाद में लोकभाषा कश्मीरी लिखी जाती थी। इस्लाम के कश्मीर में आगमन के पश्चात मुस्लिम शासकों ने फारसी को राजभाषा बना दिया किन्तु शारदा लिपि का भी अरबी–फारसी लिपि के साथ प्रचलन जारी रहा। प्रमाण स्वरूप हारी पर्वत परिसर में प्रसिद्ध धर्मगुरु मखदूम साहिब की ज़ियारत में उनका वसीयत नामा शारदा लिपि में है। मलखाह श्रीनगर में वहाबुद्दीन की ज़ियारत के पास प्राचीन कब्र का शिलालेख अरबी लिपि के साथ–साथ शारदा लिपि में भी खुदा हुआ है। जनसत्ता के प्रारम्भ में कश्मीरी भाषा के लिए एक मानक लिपि का सुझाव प्रस्तुत करने वाली विशेषज्ञ समिति के वरिष्ठ सदस्य प्रसिद्ध कवि गुलाम अहमद महजूर ने शारदा लिपि की वकालत की थी। पं. जियालाल कौल जलाली ने नागरी की और प्रो. जयलाल कौल ने रोमन की वकालत की। परन्तु बहुमत से फारसी–उर्दू (नस्तालीख) लिपि को ही मान्यता दी गयी। उधर हिन्दु महिलाएं विशेषकर नागरी लिपि का ही प्रयोग करती रहीं। महजूर ने अपनी कविताओं के संकलन–कलामि महजूर और पयामे महजूर नागरी लिपि में भी छापे। गुलाम अहमद फाज़िल, गुलाम रसूल 'सन्तोष' तथा रसूल 'पोम्पुर' ऐसे मुसिल्म साहित्यकार थे जो दोनों लिपियों में कश्मीरी लिखते थे।

बदली हुई परिस्थितियों में जब चार लाख देशभक्त कश्मीरी समाज तेईस वर्ष से विस्थापित जीवन व्यतीत कर रहा है। उनके लिए केवल नागरी लिपि में ही मातृ भाषा कश्मीरी का प्रयोग करना अनिवार्य हो गया है। इस कालावधि में 50–60 कश्मीरी ग्रंथ नागरी लिपि मे लिखकर छापे गये।

हमने केन्द्र सरकार से कश्मीरी भाषा के लिए नागरी लिपि को विधिवत मान्यता देने के लिए निवेदन किया। फलतः एक दशकपूर्व तत्कालीन केन्द्र सरकार ने "कॉऊंसिल फॉर द प्रमोशन ऑफ कश्मीरी लैंग्वेज" की स्थापना करवाई। उसके एजेंडा पर देवनागरी लिपि को कश्मीरी के लिए वैकल्पिक लिपि के रूप में मान्यता दिलवाना रहा। फिर कश्मीरी नागरी ही नहीं नागरी भी को मान्यता दिलवाने की स्वीकृति हुई। दुर्भाग्य से सत्ता पलट गई और बाद की सरकार के तत्कालीन मानव संसाधन विकास मंत्री ने घाटी की एक महिला नेता के अनुरोध पर नागरी लिपि को वैकल्पिक लिपि के रूप में मान्यता दिलवाने के आदेश को वापिस लिया। अस्तु, हमारा संघर्ष जारी है और आज विस्थापित समाज की गृह पत्रिकाओं में कश्मीरी खंड नागरी लिपि में ही लिखा जाता है। विस्थपित समाज द्वारा 'वाख' नाम से उच्चस्तरीय त्रैमासिक कश्मीरी पत्रिका नागरी लिपि में ही प्रकाशित होती है।

इधर दिल्ली सरकार ने हिन्दी, उर्दू, सिंधी, पंजाबी और संस्कृत के बाद भोजपुरी और मैथिली की अकादमियों की स्थापना की। उस समय से ही हम शीला सरकार से निवेदन कर रहे हैं कि दिल्ली एवं राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में रहने वाले लाखों कश्मीरी भाषियों के लिए कश्मीरी अकादमी की स्थापना करो। मुख्य मंत्री महोदया ने हमारे प्रतिनिधि मंडल को आश्वासन दिया कि ऐसा अवश्य होगा, किन्तु आश्चर्य की बात है ऐसा आश्वासन देने के उपरान्त अभी तक कश्मीरी अकादमी नहीं बनी।

हमारा सम्बन्धित सरकारों, अकादमियों, कश्मीरी साहित्यकारों से विनम्र निवेदन है कि कश्मीरी भाषा को घाटी के अन्दर और इसपार जम्मू दिल्ली तथा देश के विभिन्न शहरों में बस रहे कश्मीरी समाज के हित के लिए कश्मीरी भाषा के लिए देवनागरी लिपि को वैकल्पिक लिपि के रूप में मान्यता देने में कोई रूकावट न आने दें। वास्तव में हम आचार्य विनोबा के कथन के अनुसार देवनागरी ही नहीं अपितु देवनागरी भी चाहते हैं। देवनागरी लिपि को मान्यता दिलाने का अनुरोध करने वाले कश्मीरी भाषी (चार लाख विस्थापित) नस्तालीख (उर्दू) प्रचलित लिपि का विरोध नहीं करते हैं। लेकिन देवनागरी लिपि को वैकल्पिक लिपि के रूप में मान्यता देने के लिए केन्द्र और राज्य सरकारों से निवेदन करते हैं। इसमें विखरे हुए कश्मीरी भाषी समाज का हित है।

नववर्ष अभिनन्दन

नवरेह (नववर्ष) सप्त ऋषि संवत 5089 (कश्मीर में प्रचलित) के पावन पर्व पर हिन्दी कश्मीरी संगम तथा कश्मीर संदेश की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

– सम्पादक मंडल





संवाद

आपके पत्र

कश्मीर संदेश (त्रैमासिक) का दिसम्बर अंक नज़र से गुज़रा। संतोष हुआ। यह पत्रिका अत्यंत कल्पनाशीलता से तरतीब दी गयी है और यह कश्मीर की संवेदना को प्रतिबिम्बित करती है। हमारे जाने माने उस्ताद और साहित्यकार प्रो० चमन लाल सप्रू जी की मेधा और विद्वत्ता का भी इसमें अक्स है। मेरी दुआ है कि हम सब अपने कलम और अपनी सोच से कश्मीर के असल जौहर की जड़ों को सींचते रहने का निरंतर कार्य करते रहें और सफलता पाएं। बीना जी और प्रो० सप्रू के लिए नमस्कार के साथ।

फ़ शहरयार
अपर महानिदेशक
आकाशवाणी महानिदेशालय, नई दिल्ली



प्रियवर चमनलाल जी,

नमस्कार आप ने कृपा करके मुझे जो 'कश्मीर संदेश' के पहले दो अंक भेजे। उन्हें पाकर बड़ी प्रसन्नता हुई। इन दोनों अंको में छपे लेखों, कविताओं और अन्य आलेखों को पढ़कर मन प्रफुल्लित हुआ। विशेषकर इस कारण कि अधिकतर सामग्री हमारी 'मॉज्य कॅशीर' से जुड़ी हुई है। *यह पत्रिका कश्मीर केंद्रित होने के कारण कश्मीर और शेष भारत के प्रांतें को परस्पर सांस्कृतिक और साहित्यिक तौर पर जोड़ने के भावात्मक रसायन का काम करेगी।* साथ ही यह आपके चिरकालीन कश्मीर में हिंदी के सराहनीय विस्तार तथा व्यवहार के प्रयासों को और भी बढ़ावा देगी। कश्मीरी साहित्य के इतिहास, स्तर और आध्यात्मिक गहनता का ज्ञान भी भारत के हिन्दी–तथा अहिंदी–भाषियों में बढाने में इस पत्रिका का विशेष योगदान रहेगा। यह मेरा विश्वास है।

मेरी कामना है कि यह पत्रिका आपकी विद्वत्ता–पूर्ण देख–रेख में और बीना जी की निष्ठापूर्ण सम्पादकता में खूब फूलेगी और फैलेगी। हाँ, मगर पत्रिका का ऊंचा स्तर बनाये रखने में कोई ढील न हो। मेरी ओर से वार्षिक शुल्क भरने के लिये आभार। चेक संलग्न है।

आपका स्नेही,
हृदय नाथ कौल 'रिंद'
'शिवाशीष' 81 अणुशक्ति नगर, नया समा रोड,
वडोदरा–390024



डॉ. बीना बुदकी जी, नमस्कार।

आपके द्वारा प्रेषित "कश्मीर संदेश" का दिसंबर अंक मिला। आभारी हूँ।

कश्मीरी कवि पण्डित ज़िन्दा कौल 'मास्टर जी' को समर्पित अंक में आवरण के पीछे उनकी मूल कश्मीरी में 'दयि लोलस कुन' शीर्षक रचना का पद्यानुवाद अंतराष्ट्रीय गीतकार पद्म भूषण हरिवंशराय बच्चन का "प्रेम परमेश्वर" पढ़कर अत्यन्त रूचिकर लगा।

आलेखों में प्रो. चमन लाल सप्रू का धर्म रक्षक गुरु तेग बहादुर बड़ा मार्मिक लगा। कश्मीर के विभिन्न रूपों को श्री पृथ्वीनाथ मधुप तथा अवतार कृष्ण राज़दान के लेखों से उसके आन्तरिक रूप की जानकारी भी मिली। कविताओं में 'मेरा कश्मीर' सुश्री शबनम शौकत तथा विस्थापन विषयक डॉ. तोषखानी तथा डॉ. फूल चन्द्रा जी की अच्छी लगीं। समीक्षाओं में डॉ. राजेन्द्र नाथ मेहरोत्रा की विवेचना पूर्ण समीक्षा अच्छी लगी।

आवरण पर मास्टर ज़िन्दा कौल की चार पंक्तियों के साथ बर्फ से ढकी कश्मीर घाटियों का बिहंगम दृश्य ही पत्रिका के कलेवर को चार चांद लगाने वाला है। पत्रिका उत्तरोत्तर विकास करे यही कामनाएँ।

शुभाकांक्षी
बद्रीनारायण तिवारी
संयोजक / अध्यक्ष, मानस संगम
38 / 24 प्रयाग नारायण शिवाला, कानपुर

'हिन्दी कश्मीरी संगम' की उच्चकोटि की सोच के परिणाम स्वरूप 'कश्मीर सन्देश' पत्रिका प्रकाशित हुई है। प्रथम अंक ही कश्मीर के सांस्कृतिक वैभव की अप्रतिम झाँकी प्रस्तुत कर रहा है– लगता है हिन्दी संसार को यह पत्रिका कश्मीर के साहित्य– संस्कृति– समाज के विविध रूपों के दर्शन कराती रहेगी।

कागज, छपाई मुखपृष्ठ सभी उत्तम। बधाई स्वीकारें।

भवानी प्रसाद, देवपुरा
प्रधान मंत्री, साहित्य मण्डल,
श्रीनाथद्वारा, राजस्थान



आदरणीया बीना जी,

दिसम्बर 12 का 'कश्मीर सन्देश' मिला। आभार! पत्रिका का अस्तित्व में आना काफी प्रसन्नता की बात है। मेरी बधाई स्वीकार करें! मैं चाहता हूँ कि 'हिन्दी कश्मीरी संगम' तथा इसका स्वागत योग्य प्रयास 'कश्मीर सन्देश' दीर्घजीवी हो। मैंने कई संस्थाएँ बनती हुई और पत्रिकायें अस्तित्व में आती देखी हैं। ये कुछ समय के लिए चलाई भी जाती है परन्तु समय का बहाव इन्हें अपने साथ कब बहा के ले जाता है पता ही नहीं चलता। यह मेरा अनुभूत सत्य है। आपकी पत्रिका के साथ ऐसा न हो यह मेरी कामना है। भगवान करें 'कश्मीर सन्देश' दीर्घजीवी हो।

वैसे प्रो. चमन लाल सप्रू जी एक कर्मठ, वाक्पटु तथा कार्यकुशल आदमी हैं। इनकी देखरेख में संस्था तथा पत्रिका चलती रहेगी ऐसा मेरा विश्वास है। परन्तु अकेला आदमी कितना कुछ कर सकता है उनके साथ कश्मीरियत के प्रति एक समर्पित दल होना ही चाहिए। सप्रू जी को मैं युवावस्था से जानता हूँ वे विद्वान होने के साथ एक अच्छे संयोजक एवं एक अच्छे वक्ता भी हैं। भगवान आपके 'संगम' के सदस्यों व शुभचिन्तकों को निरन्तर काम करने की शक्ति प्रदान करें।

तथास्तु – और हाँ, आपने उक्त पत्रिका में मेरा आलेख 'डेजिहोर' पुनर्मुदित किया। इसके लिए आभार। आलेख के साथ चित्र सम्मिलित करने के लिए शुक्रिया। मेरे योग्य कोई सेवा हो तो सूचित करें। मेरी ओर से प्रो. सप्रू जी को नमस्कार कहें।

पृथ्वीनाथ मधुप
58/7, 'शान्तासदन', सरस्वती विहार (तोमाल),
आनन्दनगर (बोडी) तालाब तिल्लो,
जम्मू–180002, मो. नं. 9796496157



'कश्मीर संदेश' के दो अंक मिले। सुन्दर सज्जा और सार्थक सामग्री का संयोजन आकर्षक है।

कश्मीर धरती का स्वर्ग कहा जाता रहा है। सौंदर्य के प्रतिमान कश्मीर की प्रकृति से प्रतिभाषित होते हैं। प्रत्यभिज्ञा दर्शन के केन्द्र कश्मीर का महत्व स्वीकार करके अनेक रचनाकारों ने कृतियां की हैं। मैंने उपेन्द्रनाथ अश्क जी के उपन्यास 'पत्थर अल पत्थर' के माध्यम से कश्मीर के निसर्ग और वहां के जीवन की छवि का एहसास किया था।

कश्मीर समस्या का नासूर सौहार्द की औषधि से ठीक हो सकता है।

कश्मीर का नाम सुनते केसर की क्यारियों से मिलने वाली सुगंध मन को आह्लादित करती है। डलझील की झांकी चित्रों के माध्यम से देखता रहा हूं।

आपकी पत्रिका कश्मीर की धरोहर को प्रथम बार हिन्दी में प्रस्तुत कर रही है। आप मेरी बधाई स्वीकार करें।

हरिमोहन मालवीय
पूर्व अध्यक्ष
हिन्दुस्तानी एकेडेमी इलाहाबाद



हाल ही में शान्तिनिकेतन में हुए हिन्दी साहित्य सम्मेलन' में आपसे मुलाकात हुई व आपसे मिलकर मुझे यह जानकारी हुई कि कश्मीर में आप हिन्दी त्रैमासिक पत्रिका 'कश्मीर संदेश' प्रकाशित कर रहे हैं। मेरे हाथों में इसका दूसरा अंक है जिसकी विषय–सामग्री पढ़कर एक सुखद अनुभूति हुई तथा मन में बड़ी प्रसन्नता हुई कि अब हिन्दी भाषा–भाषियों के लिए इस प्रदेश का सामाजिक–सांस्कृतिक वैभव जानने का अवसर मिलेगा। अब तक हम कश्मीर के सौन्दर्य को ही निहार रहे थे परन्तु अब इस पत्रिका के माध्यम से राजस्थान के घरों पर भी कश्मीर की बयार अपनी महक फैलाते हुए सम्पूर्ण भारत वर्ष में फैले।

निश्चित रूप से कश्मीर से हिन्दी पत्रिका निकालना एक सराहनीय प्रयास है तथा जन–जन से यह जुड़ सके इन्हीं शुभकामनाओं के साथ सम्पूर्ण संपादन मण्डल को मेरा साधुवाद।

(श्रीमती) सुमन कंवर
व्याख्याता, शोधार्थी (हिन्दी)
511,सुरपुरा हाऊस
हमीर कॉलोनी, मदनगंज–किशनगढ़
अजमेर, राजस्थान–305801



अद्भुत जीवट संग कर रहे श्रीमन कार्य विशेष
घाटी सरि संग गर्व नित करत भारत देश।
सफल आपका संपादन चयन श्रेष्ठ विषयों का,
जन जन में हो लोकप्रिय यह कश्मीर संन्देश।।

डॉ. ताराचन्द पाल 'बेकल'
महागुण मेंशन, वैभव खंड, इन्दिरा पुरम (गाजियाबाद)

डॉ. वीरेन्द्र शर्मा

कश्मीर का संस्कृत वाङ्मय को अवदान

'कश्मीर सन्देश के प्रवेशांक में प्रकाशित डॉ. अद्वैत वादिनी कौल के कश्मीर का संस्कृत को अवदान लेख की दूसरी कड़ी प्रस्तुत है– सम्पादक



आज से लगभग 5 दशग पूर्व की बात है। उन दिनों मैं बी.ए. का छात्र था। संस्कृत मेरा प्रिय विषय था। पाठ्यक्रम में निर्धारित पुस्तकों के अतिरिक्त मैं नियमित रूप से संस्कृत की बहुत सी पुस्तकें, पुस्तकालय से लाकर पढ़ा करता था। संस्कृत– साहित्य की विभिनन विधाओं ओर उनके इतिहास का अध्ययन–अनुशीलन करते हुए मुझे ऐसी अनुभूति होने लगी कि संस्कृत–वाङ्मय में अधिसंख्य विद्वानों की जन्मभूमि कश्मीर है।

इस सम्बन्ध में यह तथ्य उल्लेखनीय है कि कश्मीर के संस्कृत–विद्वानो का अत्यंत प्राचीन काल से ही संस्कृत भाषा ओर साहित्य की श्रीवृद्धि में विशिष्ट योगदान रहा हैं कश्मीर के संस्कृत–विद्वानों के उल्लेखनी योगदान की महत्ता से आकृष्ट होकर उन्हीं दिनों मैंने उनकी एक सूची तेयार की ाी, जिसमें यत्र तत्र मैंने अपनी टिप्पणियाँ भी जोड़ दी थीं, अंग्रेज़ी–साहित्य में एम.ए. करने के कारण वह सूची संस्कृत–संबंधी–सामग्री में सुरक्षित रख दी।

अध्ययन समाप्त करेन के पश्चात् राजस्थान विश्वविद्यालय से सम्बद्ध एक कालेज में अध्यापन प्रारंभ कर दिया। तत्पश्चात् केन्द्रीय सेवाओ में प्रविष्ट होकर भारतीय विदेश सेवा में कार्य करने लगा।

संस्कृत में विशेष अभिरुचि होने के कारण देश अथवा विदेशों में जहाँ भी रहा, वहाँ के संस्कृत विद्वानों, अनुरागियों के सम्पर्क में बना रहा।

सन् 1975–1976 की बात है। उन दिनों मैं दिल्ली में शास्त्री भवन स्थित केन्द्रीय ग्रन्थागार में मुझे अवकाश के क्षणों में पढ़ने के लिए नियमित रूप से जाया करता था उन्हीं दिनों मेरी दृष्टि 'चौरपंचाशिका' की एक प्राचीन दुर्लभ पुस्तक पर पड़ी :–

The Chaura Panchasika
(An Indian Love Lament)
Translated from the Sanskrit by Sir Edwin Arnold

इसकी 'भूमिका' दिनांक 9 अप्रैल 1896 को लंदन में लिखी गई पाठकों की सुविधा के लिए यह भूमिका अविकल रूप में यहाँ उदधृत की जा रही है:–

In 1798, the very learned lassen, rummaging in the library of the Hon'ble East India company at Whitehall, found a MS in Sanskrit of this old poem-the Chauapanchasika on "Fifty Distichs of Chauras". He gave his copy, and comments, to the scarcely less erudite Pater a Boohlar of Berlin, who published in that city the text (and the commentaries of our Ganapas upon it) in very excelent and perpicuous Devanagiri type, affexing a preface and appending a Latin translation. Going lately for a month's holiday to the Canary Islands, I took a transcription of the two hundred Sanskrit shlokas with me, and made this English version of them tin before breakfast, at each lovely day breadk, in the garden at Orotava.

India still greatly admires the poem which, if it be, as has been thought, contemporary with Bhartrihari woild date from the commencement of the Christian Era. Its legend runs that a young and accomplished Brahman, Charuas, at the court of King Sundara of Kanchipur, fell in love with the beautiful daughter of the Maharaja named Vidya. The flame was mutual and when the secret of the pair became revealed, the incessed manorch pronounced sentence of death upou Chauras, who passed his last hours in prison, composing these verses, in praise and recollection his lost mistress.

Each quatrain of the half hundred consisting the poem begins with the same sanskrit word of reminiscence, adyapi, and their characteristic is a melodious and ingenious monotony of fanciful passion, The story lives that the Maharah forgave the offence of the lover on account of the skill of the poet. But Pater of Bohden very justly observes: "nulla facile lingua talia exprimer potest verba sancrit" and, if I reproduce my little book just as I work (and grotesquely, illuminated) if in that Hesporidean palm grove, this shall only he to amuse scholars, lovers and ladies, not from any notion of its literary merit

London Edwin Arnold , April 9, 1896

'चौरपंचाशिका' के लालित्य ओर काव्य–वैभव से प्रभावित होकर मैं इस पर शोध करना चाहता था मैंने चौरपंचाशिका के जो अन्य संस्करण कालांतर में देख। उनका विवरण इस प्रकार है:

1. Black Marigolds by E-Powys Mathers आवाम्

Published by B.H. Blackwell, Brgad St. Oxford.

इसकी प्रस्तावना 1919 की लिखी हुई है।

2. The Secret Delights of Love by Pundit Bilhana (from the Sanskrit) Rendered into English by Gertrude Clorus Sehwehell, with illustrations by Gerhard Collwitzer, The Peter Pauper Press Mount Veson, New York 1966

3. Phantasies of a Love - Thief by Barbara Stoler Miller The Cowra Pancasika Attributed to Bilhana a critical Edition and Translation of Two Recenscons with sixteenth Century illustrations of the text Published by Columbia University Press.

New York and London, 1971

1991–94 की अवधि में कनाडा की राजधानी औटवा में मेरा प्रवास रहा। वहाँ भारतीय संस्कृति, धर्म एवं अध्यात्म के प्रबुद्ध विद्वान डा. हर्ष दहेजिया से संपर्क हुआ। उनका कश्मीर के शैव दर्शन पर गहरा अध्ययन है। इस पर उनकी पुस्तक **Parvatidarpana - An exposition of saivism through the images of Siva and Parvati,** 1997 में प्रकाशित हो चुकी है (मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली)।

कश्मीर के संस्कृत विद्वानों के सम्बन्ध में उनसे निरंतर चर्चा के कारण इस विषय में अभिरुचि न केवल बनी रही, उसमें उत्तरोत्तर वृद्धि होती चली गई।

विदेश सेवा से निवृत होकर सन् 1997 के अप्रैल मास से वसुंधरा एन्क्लेव में रह रहा हूँ। आने के कुछ समय पश्चात् ही प्रो. चमनलाल सप्रू से मिलना हुआ। हिन्दी भाषा और साहित्य, भारतीय संस्कृति एवं अध्यात्म में न केवल उनकी गहरी रुचि और पैठ हे, वे एक समर्पित साहित्य–साधक हैं। वे त्रिभाषिक मासिक पत्रिका 'कोशुर समाचार' के हिन्दी खंड के संपादक रह चुके हैं और वर्तमान में 'कश्मीर सन्देश' के प्रधान सम्पादक 'हैं। उनके संपर्क में आते ही कश्मीर के संस्कृत–विद्वानों के अवदान–का संदर्भ ह्रदय में एक बार पुनः जागृत हो गया।

मुझे कश्मीर के संस्कृत विद्वानों की अपनी पुरानी सूची का स्मरण हो आया। संस्कृत–सामग्री में मैंने उसे खोजा। पुराने टिप्पणी–लेख आदि खोजते हुए यह सूची मुझे मिल गई। देखते ही मन प्रफुल्लित हो गया। लगा मेरी खोई हुई एक बहुमूल्य वस्तु मुझे मिल गई है। यह सूची इस प्रकार है:–

- ऐतिहासिक–काव्य, 'राजतरंगिणी' के रचयिता कल्हण : (ई. 12वीं शती)
- 'महाभाष्य–प्रदीप' के रचयिता, कैय्यट : (ई. 13वीं शती)
- 'काव्यप्रकाश' के रचनाकार, मम्मट : (ई. 11वीं शती)
- श्रृंगाररस के प्रसिद्ध काव्य–'अमरशतक' के प्रणेता–अमरुकवि : (ई. 7वीं–8वीं शती)
- प्रसिद्ध आलंकारिक, 'अभिनवगुप्त' : (ई. 10वीं–11वीं शती)
- 'ध्वन्यालोक, काव्यालोक' आदि के रचयिता, आचार्य आनन्दवर्धन : (ई. 9वीं शती)
- वेदों के टीकाकार, 'उवट', अथवा 'औयट' : (ई. 12वीं शती)
- 'अमरकोष' के टीकाकार, क्षीरस्वामी : (ई. 8वीं–9वीं शती)
- औचित्य–सम्प्रदाय के प्रसिद्ध आचार्य क्षेमेनद्र : (ई. 11वीं शती)
- 'चौरपंचाशिका' के रचयिता, चौरकवि (बिल्हण) : (ई.
- आचार्य भ
- कवि दामोदरगुप्त : (ई. 8वीं–9वीं शती)11वीं–12वीं शती)
- आचार्य भट्टलोल्लट (ई. 11वीं शती)
- 'अलंकारसारसंग्रह' के रचयिता, भट्टोद्भट : (ई. 8वीं–9वीं शती)
- (उद्भट, उद्भट भट्टए उद्भटाचार्य) (ई. 8वी शती)

- स्पन्दसर्वस्व के रचयिता, भट्ट कल्लट : (ई. 9वीं शती)
- द्वितीय राजतरंगिणी के रचनाकार, जोनराज : (ई. 15वीं शती)
- तृतीय राजतरंगिणी के रचयिता, श्रीवर पण्डित : (ई. 16वीं शती)।

पुरानी सामग्री में मुझे 'महाभाष्यप्रदीप के प्रणेता', व्याकरण के उद्भट विद्वान कैय्यट की विशिष्ट प्रतिभा एवं विलक्षण स्मरण–शक्ति के सम्बन्ध में यह वृत्तांत भ्ज़ी मिला। कैय्यट ने पतंजलि के महाभाष्य का इतनी एकाग्रता एवं मनोयोग–साधना से अध्ययन, मनन ओर स्मरण किया था कि उन्हें यह ग्रन्थ ने केवल पूरा का पूरा कण्ठस्थ था, उसके निहितार्थ ओर संकेतार्थ में भी उनकी अद्भुत दक्षता थी। कहा जाता है कि व्याकरण के अप्रतिम विद्वान वररुचि ने भी महाभाष्य के जिन जिन स्थानों को दुरुह समझकर दोड़ दिया था, वे भी कैय्यट को पुनः–पुनः अभ्यास करने के कारण सुस्पष्ध हो गए थे, यही कारण है कि भारत के विभिन्न क्षेत्रों से विद्वान निरंतर कैय्यट से मिलने एवं अपनी शंका–समाधान के लिए आया करते थे।

किंवदन्ती है कि एक बार जब दक्षिण स आचार्य कृष्णभट्ट कश्मीर में आचार्य कैय्यट के यहाँ पहुँचे, तो उन्होंने देखा कि कैय्यट अपने हाथ में कुल्हाड़ी लिए हुए लकड़ियाँ चीर रहे थे। बीच–बीच में बैठे हुए विद्यार्थियों को वे व्याकरण भी पढ़ा रहे थे। विद्यार्थियों के सामने पुस्तकें थीं और कैय्यट अपनी कण्ठस्थ विद्या के आधार पर छात्रों को शिक्षा प्रदान कर रहे थे। आचार्य कृश्झाभट्ट को यह सब देखकर अत्यंत आश्चर्य हुआ, वे स्तब्ध रहे गए।

विद्वान शिरोमणि कैय्यअ आत्म–सम्मान के धनी थे। आचार्य कृष्णभट्ट ने जब कश्मीर के राजा से कैय्यट को कुछ भूमि ओर धन दक्ष्झिणा के रूप में दिलाने का प्रस्ताव रखा तो आत्म–सम्मान की रक्षा करते हुए कैय्यट ने उस प्रस्ताव को विनय अस्वीकार कर दिया।

अब इस लेख में सांकेतिक रशैली में संस्कृत वाङ्मय के विभ्झिन्न क्षेत्रों में कश्मीर के विद्वानों का विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है:–

काव्यशास्त्र के सिद्धान्त

संस्कृत वाङ्मय में काव्य–शास्त्र–विषयक सिद्धांतों के प्रतिपादन में कश्मीर के विद्वान आचार्यों का विशेष स्थान है। काव्य–शास्त्र में जिन मुख्य सिद्धान्तों (सम्प्रदायों) का निरूपण हुआ है, वे इस प्रकार हैं:–

1. रस सम्प्रदाय 2. अलंकार–सम्प्रदाय 3. रीति सम्प्रदाय 4. वक्रोक्ति सम्प्रदाय 5. ध्वनि सम्प्रदाय 6. औचित्य–सम्प्रदाय.

संस्कृत काव्य शास्त्र का प्राचीन्तम सिद्धान्त है रस सिद्धान्त। ऐसा माना जाता है कि इसके आदि प्रवर्तक आचार्य भरतमुनि हैं, जिनके नाट्यशास्त्र में इसका सांगोपांग विवेचन हैं किन्तु इसकी विशद ओका 'अभिनवभारती' कश्मीर के आचार्य अभिनवगुप्त की हैं

काव्य शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धान्तों में 'अलंकार' सम्प्रदाय के प्रवर्तक हैं कश्मीर के आचार्य भामह। उनके ग्रंथ का नाम है – काव्यालंकार।

काव्य शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धान्तों में रीति सम्पगदाय के पवर्तन का श्रेय कश्मीर के ही आचार्य वामन को प्राप्त हैं उनके द्वारा प्रणीत ग्रन्थ का नाम है 'काव्यालंकार–सूत्रवृत्ति'। उन्होंने रीति को काव्य की आत्मा बताते हुए काव्य में रीति के वैशिष्टय को रेखांकित किया।

ध्वनि–सिद्धान्त काव्य शास्त्रीय समीक्षा का अत्यन्त महत्वपूर्ण सिद्धान्त है। इसके प्रमुख आचार्य हैं कश्मीर के ही आनन्दवर्णन। उनका प्रमुख ग्रन्थ है ध्वन्यालोक। भारतीय काव्य भाषा में वक्रोक्ति सम्प्रदाय को प्रतिष्ठित करने के प्रवर्तक आचार्य कुन्तक हैं। उनके ग्रन्थ 'वक्रोक्ति' जीवित में वक्रोक्ति सिद्धान्त का विशद विवेचन है।

काव्य शास्त्र के क्षेत्र मे 'औचित्य' सम्प्रदाय की प्रतिष्ठा भी कश्मीर के ही आचार्य क्षेमेन्द्र ने की, जिनका ग्रन्थ 'औचित्यविचारचर्चा' इस सिद्धान्त का प्रमुख ग्रन्थ है।

संस्कृत साहित्य में काव्य शास्त्रीय समीक्षा के अन्य उल्लेखनीय कश्मीरी विद्वानों के नाम ईास प्रकार है :–

- 'अलंकारसारसंग्रह' के प्रणेता – आचार्य उद्भट
- 'काव्यालंकार' के रचयिता – आचार्य रुद्रट
- 'काव्याप्रकाश' के प्रणेता – आचार्य मम्मट
- 'अलंकारसर्वस्व' एवं 'साहित्य समीक्षा' के रचयिता–आचार्य रुय्यक
- व्यक्तिविवेक के रचयिता – आचार्य महिमभट्ट

इनके अतिरिक्त आचार्य भट्ट लोल्लट, आचार्य शंकुक आदि ने भरतभुमि के नाट्यशास्त्र की टीकाएँ लिखी है।

महा काव्य 1. 'भट्ट भौमक' (भट्टभूम, भट्टभीम अथवा भट्टभूमक) सातवीं शती द्वारा विरचित 'रावणार्जुनीयम्'।

27 सर्गों के इस महाकाव्य में रावण और कार्तवीर्य सहस्रार्जुन के युद्ध का वर्णन है, 'भट्टिकाव्य' की परम्परा में यह महाकाव्य व्याकरण के सिद्धान्तों एवं नियमों के लाक्षणिक, व्यावहारिक स्वरूप का महाकाव्य हैं

2. 'राजानक वागीश्वर रत्नाकर' (9वी शती) द्वारा 50 सर्गों में विरचित 'हरविजय'।

इस महाकाव्य में भगवान् शंकर द्वारा अन्धकासुर के वध का विवरण है।

3. 'शिवस्वामी' (9वी शमी) द्वारा विरचित 'कुप्फिनाभ्युदय'–महाकाव्य।

इस महाकाव्य में लीलावती नगरी के राज कुप्फिन के बौद्ध धर्म को अंगीकार कने की कथा अत्यन्त मनोवैज्ञानिक शैली में वग्रित हे। महाकवि शिवस्वामी ऐसे उदाहरहृदय थे कि स्वयं शैव होते हुए भी उन्होंने इस महाकाव्य के नायक के माध्यम से भगवान बुद्ध की महिमा का वर्णन किया है।

4. 'महाकवि मंख' (12वीं शती) द्वारा विरचित 'श्रीकण्ठचरितम्'

25 सर्गों में निबद्ध इस महाकाव्य में भगवान शंकर द्वारा त्रिपुरासुर के विनाया की कथा का वर्णन हैं

ऐतिहासिक महाकाव्य

'महाकवि बिल्हण' (11वीं शती) रद्वारा विरचित 'विक्रमादेवचरितम्'

18 सर्गों में प्रणीत इस महाकाव्य के अन्तिम सर्व में महाकवि ने अपने वंश, परिवार का परिचय दिया हैं कश्मीर की ऐतिहाकसक सूचना–सामग्री के लिए यह महाकाव्य अत्यन्त महत्वपूण हे।

'महाकवि कल्हण' (12वी शती) द्वारा विरचित 'राजतरंगिणी'

इस महाकाव्य में आदिकाल से लेकर 12वी शती तक का इतिहास वर्णित है, इस महाकाव्य की अपनी ऐतिहासिक एवं काव्य–गत विशेष्ताओ के कारण अत्यन्त व्यापक प्रसिद्धि और लोकप्रियता हैं कश्मीर के सामाजिक, सांस्कृतिक, भौगोलिक, ऐतिहासिक विवरणों की अत्यंत महत्वपूर्ण प्रामाणिक जानकारी इस महाकाव्य उपलब्ध है, इस महाकाव्य में 8 तरंगें है।

'महाकवि जोनराज' (15वीं शती) द्वारा विरचित द्वितीय 'राजतरंगिणी'

जोनराज ने कश्मीर के उस इतिहास को अगे बढ़ाया हैं जिसका महाकवि कल्हण की 'राजतरंगिणी' मे वर्णन हैं

जानेराज ने, सुल्तान जैनुलाब्दीन के शासन का विस्तार से वर्णन किया हैं जोनराज की द्वितीय 'राजतरंगिणी में लगभग 450 वर्षों का कश्मीर के राजाओ का इतिहास का वर्णन हें

'महाकवि श्रीवर'' (15वी शती) द्वारा विरचित 'जैनराजतरंगिणी' महाकवि जोनराज क शिष्य श्रीवर ने अपने गुरु द्वारा वग्रित कश्मीर के इतिहा को अपने ग्रन्थ में आगे बढ़ाते हुए इस ग्रन्थ की रचना ही, इस ग्रनी मे चा तरंगे हैं: जो प्रत्येक अपने मे पूग्र हैं इन चार तरंगों के इतिहास–नायक इस प्रकार हैं– 1. जैनुलाब्दीन 2. सुल्तान हैदरशाह 3. सुल्तान हसनशाह 4. सुल्तान मुहम्मदशाह।

'महाकवि शु' (16 वी शती) द्वारा प्रणी 'राजतरंगिणी' इस महाकाव्य में कश्मीर के जिन 5 सुल्तोनों के शासन का वर्णन है वे इस प्रकार हैं– फतहशाह, मुहम्मदशाह, इब्राहीमशाह, नाजुकशाह और शम्मशुद्दीन।

सार–संक्षेप–काव्य

'महाकवि क्षेमेन्द्र' (11वीं शती) ने प्राचीन भारतीय महाकाव्यां के सारसक्षेप का 'माजरी' नाम से लिखकर अपनी काव्य प्रतिभा का परिचय दिया है। इन मंजरी काव्यों का विवरण इस प्रकार है:–

1. भारत मंजरी– (महाभारत का सार–संश्रक्षेप)
2. रामायण मंजरी– (रामायण का सार–संक्षेप)
3. बृहत्कथा मंजरी – गुणाढ्य द्वारा विरचित बृहत्कथा का रूपान्तरित संक्षेप

मुक्तक काव्य

'कवि भल्लट' (9वीं–10वीं शती) द्वारा विरचित 'भल्लटशतक' अन्योक्ति प्रधान भल्लटशतक में व्यंग्यात्मक शैली में संभ्रन्त वर्ग में व्याप्त अवगुणों और दोषों की ओर कटाक्ष की अभिव्यंजना हें वस्तुतः अत्यन्त संवेदनशील एवं सहृदय कवि के मानसिक क्षोभ को ही इस कवित में अभिव्यक्त किया गया है।

'महाकवि क्षेमेन्द्र' (11वीं शती) द्वारा विरचित–

(1) 'चतुर्वर्ग संग्रह'– पुरुषार्थ चतुष्ट्य– धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष के विभिन्न अंगों के महत्व का इस संग्रह में अच्छा वर्णन हे। यह ग्रंथ चार परिच्छेदों मे विभक्त है।

(2) ''दर्पदलन–विचार प्रधान इस लघुकाव्य में दर्प (अभिमान) के सात कारणों– धन, ज्ञान, कुल, वीरता, सौन्दर्य, तप एवं दान के स्वरूप का वर्णन हैं

(3) 'समयमातृका'–वेश्यावृत्ति से सम्बद्ध इस लघुकाव्य में एक युवती वेश्या कलावती की कथा के माध्यम से वेश्याओं तथा उनके सहयोगियों से धनावान व्यक्तियों की सम्पत्ति की रक्षा करने का वर्णन है। पूरा काव्य आठ समयों में विभक्त है।

(4) 'देशापदेश'– यह लघुकाव्य आठ उपदेशों में विभकत है जिसमें व्यंग्यात्मक शैली में कश्मीर राज्य के तत्कालीन सामाजिक ओर राजनीतिक दोषों को उजागर किया गया है।

(5) 'कला विलास'– इस लघुकाव्य की वर्णन शैली भी व्यग्यात्मक है– दस विलासों में विभक्त इस काव्य में जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में परिव्याप्त छल, कपट, पाखण्ड, दम्भ, आडम्बर आदि का चित्रण है।

(6) 'सेव्यसेवकोपदेश'– इस लघुकाव्य में केवल 61 पद्य हैं जिनमें सेवा, धर्म– सेव्य तथा सेवक– से सम्बद्ध विविध झाँकियाँ प्रस्तुत की गई हैं।

'कविशम्भु' (11वीं 12वी शती) द्वारा विरचित

'अन्योक्तिमुक्तालता'

102 पद्यों का यह काव्य–संग्रह अन्योक्ति प्रधान है। 'कवि दामोदरगुप्त' (8वीं–9वीं शती) द्वारा विरचित 'कुट्टनीमत'

यह काव्य आर्या छन्द में है, पूरे काव्य में 1 सहस्र से भी .अधिक अकार्याछन्द हैं, इस काव्य में वेश्याओं की जीवन–शैली का अत्यन्त सूक्ष्म वर्णन है.

'कवि जल्हण' (11वीं–12वीं शती) द्वारा विरचित 'मुग्धोपदेश' 66 पद्यों में विचरित इस लघुकाव्य में नवयुवकों के चरित्र को भ्रष्ट होने से बचाने के लिए व्यावहारिक उपदेशों का वर्णन है।

लोक कथात्मक काव्य

'महाकवि सोमदेव' (11वीं शती) द्वारा विरचित 'कथासरितसागर' पैशाची भाषा में निबद्ध गुणाढ्य की कृति 'बृहत्कथा' का कथा–साहित्य में विशेष स्थान है। इसी ग्रंथ का संस्कृत में रूपान्तर किया है कश्मीर के महाकवि सोमदेव ने, जो 'कथासरितसागर' नाम से प्रसिद्ध है।

'कथासरित्सागर' में बृहत्कथा के कवि गुणाढ्य तथा ग्रन्थ में वर्णित कथाओं का परिचयात्मक वर्णन हैं सरलता, रोचकता एवं व्यावहारिक जीवन में उपदेयता की दृष्टि से यह ग्रन्थ अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

नाट्य–साहित्य

'बिल्हण' (11वीं शती) द्वारा विरचित नाटिका **'कर्णसुन्दरी'**

चार अंकों की इस नाटिका में राजा कर्णदेव के विद्याधारी कन्या के साथ प्रेम–प्रसंग का चित्रण है।

विविध

'आयुर्विज्ञान' के क्षेत्र में सिद्धहस्त विशेषज्ञ आचार्य चरक का नाम सुप्रसिद्ध है। इनकी **चरक–संहिता** चिकित्सा–शास्त्र का अप्रतिम ग्रन्थ रत्न है। ध्यातव्य है कि वैद्यराज आचार्य चरक कश्मीर के निवासी थे। ऐसी कंवदन्ती है कि आचार्य चरक स्थान–स्थान पर चलकर, घूम–घूमकर रोगियों का उपचार किया करते थे, अतः चलते रहने के स्वभाव के कारण उनका चरक नाम प्रसिद्ध हो गया।

इसी प्रकार **काम–शास्त्र** के बहुचर्चित विद्वान कोक पण्डित भी कश्मीर के ही थे।

महाकवि कालिदास : विश्वकवि कालिदास की जन्मभूमि के संबंध में कुछ विद्वानों का मत यह भी है कि कालिदास की जन्मभूमि कश्मीर ही है। प्रसिद्ध संस्कृत विद्वान राघवन ने एक स्थान पर लिखा है– "The thesis has been expounded that the birth place of Kalidasa is Kashmir, the home of all learning, as poet Sri Harsha says, the land, as poet Billhana says, of the two specialties of saffron and poetry"

अर्थात यह मान्यता प्रस्तुत की गई है कि कालिदास की जन्मभूमि कश्मीर है, जो श्रीहर्ष के शब्दों में समस्त विद्या का आगार है, तथा जैसा कवि बिल्हण का कहना है, जो केसर तथा कविता – दो विशेषताओं की भूमि है।

(Sanskrit Literature : Talks broadcast over All India Radio-selected and edited by Dr. V. Raghavan. Publications Div. Govt. of India-1961)

प्रसिद्ध संस्कृत विद्वान पं लक्ष्मीधर कल्ला (दिल्ली विश्वविद्यालय) ने अपने शोध के द्वारा यह प्रमाणित करने का प्रयास किया है कि कालिदास कश्मीर के ही निवासी थे।

अध्यात्म–शैवर्दशन

'वसुगुप्त' (ई. 8वीं शती) शैव दर्शन के आयामों का अनुसंधन करने वाले, 'शिव सूत्र' के प्रस्तोता वसुगुप्त शैव दर्शन के प्रथम आचार्य हैं,

'सोमानन्द' (ई. 9वी शती) 'शिवदृष्टि' के प्रस्तोता इन्होंने 'प्रत्यभिाा', सम्प्रदाय की आधारशिला रखी। शैवदर्शन के अन्य आचार्यों में उत्पलाचार्य, अभिनवगुप्त, क्षेमराज आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

प्राचीन काल में कश्मीर प्रदेश संस्कृत भाषा और साहित्य का प्रख्यात प्रमुख केन्द्र था। संस्कृत भाषा उस समय कश्मीर की लोकभाषा थी। सर्वत्र इसी का व्यवहार था। भगवती शारदा (सरस्वती) की इस प्रदेश पर विशेष अनुकम्पा थी। यहाँ संस्कृत के विद्वान निरन्तर संस्कृत की अभिवृद्धि में संलग्न रहते थे। इसी कारण कश्मीर को शारदा–देश कहा जाता था।

कश्मीर के संस्कृत–विद्वानों का अवदान समग्र भारतीय वाङ्मय में स्वर्णाक्षरों में अंकित हैं स्वतंत्र भारत में भारतीय जीवन–दर्शन, भारतीय संस्कृति के सम्यक् ज्ञान एवं उसके नरिरक्षण–संरक्षण के लिए यह अत्यन्त महत्वपूर्ण राष्ट्रीय दायित्व है कि संस्कृत भाषा का व्यापक प्रचार–प्रसार हो। उसे शिक्षण संस्थाओं में पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग बनाया जाए। संस्कृत के उत्कृष्ट, कालजयी ग्रन्थों के व्याख्या सहित संस्करण मुद्रित किए जाएँ। उनके विभिन्न भाषाओं में अनुवाद हों, जिससे हमें अपने राष्ट्रीय गौरव की अनुभूति हो सके, संस्कृत के ग्रंथों में प्रतिपादित जीवन के शाश्वत मूल्यों को हम आत्मसात् करके मानव जीवन की गरिमा जान सकें, चरित्र का निर्माण कर सकें तथा राष्ट्र की सेवा में अपना योगदान दे सकें। इससे सम्पूर्ण मानवता की ही सेवा होगी।

लेखक : पूर्व राजदूत हैं।
संपर्क : डी–213, इला अपार्टमेंट्स, वसुंधरा एन्क्लेव, दिल्ली–110096

स. हरभजन सिंह 'सागर'

ललद्यद की अस्थियाँ

(पंजाबी कहानी)



यह कोई दैविक चमत्कार ही था कि पूरे सफर में गठरी की एक भी गांठ नहीं खुली। पर उसमें से अस्थियाँ गायब थीं। देखते ही मारे कंपकंपाहट और घबराहट के उसके माथे पर पसीने की नन्हीं नन्हीं बूँदें उभर आई। वह भौंचक्का सा खाली गठरी को देखने लगा। उसकी चिंता का पहला कारण यह था कि यह अस्थियां किसी साधारण मानव की नहीं अपितु ललद्यद की थीं। जो छः सौ वर्ष से भी अधिक लंबी आयु बिता कर अभी कुछ दिन पहले ही स्वर्ग सिधारी थी। वह चुपचाप खड़ा सोच रहा था कि घर वापिस पहुँचकर अस्थियों के खो जाने का क्या कारण बताएगा और क्या लोग उसकी बातों पर विश्वास करेंगे?दूसरा कारण यह था कि वह इस समय अजनबी लोगों से घिरा हुआ था। लोग तरह–तरह की बातें कर रहे थे। उनकी बातें सुन–सुनकर वह चिंतित हो रहा था। वह सोचने पर विवश था कि यह कैसे हुआ? मैने तो पूरे सफर में अस्थियाँ वाली गठरी को अपनी छाती से लगा कर रखा था। एक बार भी रास्ते में खेलकर नहीं देखा। फिर अस्थियाँ?अस्थियाँ कहां गई? भला अस्थियाँ भी चुराने की चीज थी, जो कोई चुरा कर ले गया हो।

श्रीनगर से हरिद्वार तक थका देने वाले सफर के बाद अभी उसने सुख की सांस ली ही थी कि इस चिंता ने उसे घेर लिया। गठरी से अस्थियाँ गायब थीं। हरिद्वार में उसकी दृष्टि सुंदर मंदिरों के चमकते हुए कलशों पर पड़ी तो उसे यह जानकर संतुष्टी हुई कि वह अपने लक्ष्य स्थल पर पहुंच चुका था। लंबे सफर की थकावट भी उसे महसूस नहीं हो रही थीं। पल भर के लिए उसके मुख पर मंद सी मुस्कान फैल गई। तभी उसे याद आया–जब गाड़ी लाल चौक से निकल कर पांद्रियेठन पहुची ही थी कि सहसा अस्थियों वाली गठरी में कुछ हलचल हुई। जैसे पिंजरे में से बाहर निकलने के लिए कोई पंछी फड़फड़ा रहा हो। उसे महसूस हुआ जैसे जेहलम (वितस्ता) अपना प्रवाह बदल कर गाड़ी में घुस आई हो। अब गाड़ी में भी उसने कुछ उथल पुथल महसूस की। मारे घबराहट के उसकी सांस फूलने लगी। उसे लगा कि जैसे वह भी पानी में डूब रहा हो और अस्थियों वाली गठरी पानी में तैर रही हो। उसने झट से भीगी गठरी को उठाकर अपनी छाती से भीच लिया। उसका फिरन पानी से तर बतर हो गया था। ठंड के मारे वह कांपने लगा।

जब वह इस भयनाक सपने से जागा तो उसने देखा सभी यात्री सीटों पर ठीक ठाक बैठे थे और गाड़ी भी ठीक गति से चल रही थी। वह सोचने पर विवश हो गया कि यह उसका कोई सपना या भ्रम मात्र ही था। इसलिए उसने इस दैविक चमत्कार के बारे में सोचना ही छोड़ दिया।

उसने गंगा के पुल से चलते हुए लोगों को अपनी ओर आते देखां जब वे उसके पास पहुंचे तो उसकी दृष्टि लोगों के बीच चल रहे एक पूज्य महात्मा पर पड़ी। गेरूएं रंग की धोती, कंधे तक फैले हुए खिचड़ी बाल, गले में माला, लंबा तिलक। उसने सोचा क्यों न ललद्यद की अस्थियों का जल प्रवाह इसी महात्मा के हाथों से करवाया जाये। यह तो बड़े पुण्य का काम होगा। उसे अपनी सोच पर खुशी के साथ साथ संतोष भी हुआ। जब वे उसके समीप पहुंचे तो उसने देखा उस पूज्य महात्मा के मुख पर एक आलौकिक चमक थी। उसके कंधे पर हाथ रखकर महात्मा ने पूछा "कहो भक्त! कैसे याद किया?"

इतना सुनते ही वह चौंक पड़ा और सोचने लगा। इस महात्मा ने कैसे जान लिया कि मैं उन्हीं के बारे में सोच रहा हूँ। फिर मन ही मन प्रसन्न हुआ कि उसने महात्मा के बारे में ठीक ही सोचा था।

"स्वामी जी! मैं कश्मीर से इन अस्थियों का जल प्रवाह करने आया हूँ।"

उसकी बात सुनते ही महात्मा मुस्कुराने लगे।

"बेचारा कश्मीरी शरणार्थी होगा" एक श्रद्धालु ने सहानुभूमि जतलाते हुए कहा।

"स्वामी जी! कश्मीर में मुसलमानों ने हमारे पंडित भाइयों पर बहुत अत्याचार किए हैं यह भी उनमें से एक होगा।" दूसरे ने बोझिल आवाज में कहा।

"आप कश्मीरी पंडित हैं?" भीड़ में से किसी ने पूछा।

उसकी बात सुनते ही क्षण भर के लिए वह चिंतित हो गया ओर बोला– "जी नहीं।"

उत्तर सुनते ही सभी स्तब्ध हो गए। लेकिन स्वामी जी ने प्रेम भाव से मुस्कुराते हुए पूछा– "कौन हो तुम?"

"मैं एक साधारण मनुष्य हूँ। परंतु धर्म की पहचान से मुसलमान हूं। मेरा नाम सैयद फज़लदीन है।"

"मुसलमान?"

"दूर से ही बात करो।" भीड़ में से कोई क्रोध से चिल्लाया। सुनते ही फज़लदीन दो कदम पीछे हट गया। उसकी ओर देखते हुए स्वामी जी मुस्कराते हुए दो कदम आगे बढ़े और उसके बराबर खड़े होकर कुछ कहना ही चाहते थे कि एक श्रद्धालु जोर से बोला–

"स्वामी जी! आप इस नीच से दूर रहें। इसको छूकर आप भ्रष्ट हो जाएंगे।"

स्वामी जी ने बड़े गांभीर्य के साथ भीड़ की ओर देखा और बोले "भक्तों! कोई मनुष्य जन्म से नीच नहीं होता। उसके बुरे कर्म ही उसे नीच बनाते है। क्रोध करना अच्छी बात नहीं है।" फिर वह उससे बोले–

"अरे भले पुरुष! इन भटके हुए लोगों की बातों का बुरा मत मानना। पर इन्हें समझाओ। मुसलमान तो शवों को दफनाते हैं। फिर यह अस्थियाँ कैसी।"

स्वामी जी की बात सुनकर उसका मांथा ठनका। उसने सोचा, "यह सच ही कह रहे हैं मुसलमान और अस्थियाँ?भला यह कैसे हो सकता है? इन्हें तो पूरी बात बतानी पड़ेगी। इसलिए वह स्वामी जी से बोला– "महाराज। यह अस्थियां किसी मुसलमान की नहीं। अपितु ललद्यद की हैं वह एक हिंदू साध्वी थी। वह पूज्या देवी हम सब कश्मीरियों की मां थी। हम मुसलमान उन्हें श्रद्धा और सम्मान से लला आरिफा कहते थे।"

"हां! मैं जानता हूँ... और मेरी जानकारी के अनुसार भगवान शिव की उपासक इस साध्वी का नाम लल्ल योगेश्वरी था। पंडित उसे ललद्यद ओर मुसलमान लला आरिफा कहते थे। परंतु भक्त साढ़े छः सौ वर्ष बीत जाने के बाद आज तुम किस ललद्यद की अस्थियों को लेकर हरिद्वार आए हो।"

"हां महाराज! आप तो सब जानते हैं फिर मुझ परदेसी को पहेलियों में क्यों उलझा रहे हैं?"

"केवल लोगों की जानकारी के लिए।"

"महाराज! यह सच है कि ललद्यद का जन्म आज से लगभग साढ़े छः सौ वर्ष पूर्व कश्मीर के एक गांव पांद्रियेठन में हुआ था। पिछले साढ़े छः सौ वर्ष से वो हमारे हर सुख दुख में साथ–साथ रही है। हर मुश्किल में हम उनकी उंगली थाम लेते थे। उन्हें किसी ने भी बुढ़ापे की अवस्था में नहीं देखा। वो तो हर समय सदाबहार दिखाई देती थी। इसे हमारा दुर्भाग्य ही समझिए कि वो दयामयी माँ अभी चंद दिन पहले ही हमसे बिछुड़ गई। उनके जाने से हम कंगाल हो गए। बिल्कुल कंगाल। गहरा सदमा दे गई हैं?"

"स्वामी जी! क्या यह गहरा सदमा नहीं?" भीड़ में से किसी ने जोर से पूछा" यह झूठ बोल रहा है भला सोचिए जो देवी पिछले साढ़े छः सौ वर्ष से हृष्ट पुष्ट जी रही थी। वो अचानक कैसे मर सकती है। सच तो यह है कि इन लोगों ने ही उस देवी की हत्या की है। ताकि उसकी संपत्ति के उत्तराधिकारी बन सकें। स्वामी जी! अब दिखावे मात्र के लिए उस देवी की अस्थियाँ लिए घाट–घाट घूम रहे हैं। यह तो पवित्र अस्थियों का अपमान है। अपमान।

सैयद फज़लद्दीन इस भारी भीड़ में एक अपराधी की भांति भयभीत सा खड़ा था। स्वामी जी को मुस्कुराते हुए देखकर उसे राहत मिली। उन्होंने शायद उसका डर भांप लिया था। इसलिए वह भीड़ से संबोधित हुए– "अरे भले लोगों! इसे भी कुछ बोलने का अवसर दो। तुम बहुत बोल चुके हो। अब इसकी बात सुनो।"

सैयद फज़लदीन ने डरी और सहमी हुई दृष्टि भीड़ पर डाली। लोगों को क्रोधित गुस्सा देखकर उसने स्वामी जी की ओर देखा। उनसे आंखें मिलाते ही उसका सारा डर दूर हो गया। बस फिर तो वह एक दक्ष वक्ता की तरह बोलने लगा, "महाराज! सदमा कहें या दुख। पर अब तो उस स्नेहमयी माँ के बिना यह कठिन समय बिताना हमारे बस से बाहर की बात हो गई है। अब हम अत्याचार को अत्याचार कहने का भी साहस नहीं करते। हम लोगों ने तो अब बस चुप्पी सी साध ली है और हम कर भी क्या सकते हैं। अब तो कोई बड़शाह भी नहीं होगा जो निर्दोष लोगों का साथ देगा और पंडित भाइयों को अपना घर छोड़कर जाने न देगा या पलायन कर गए लोगों को वापिस बुला लेगा। हाँ महाराज! यही मारधाड़

ललद्यद के लिए गहरा सदमा साबित हुई और उसकी मृत्यु का कारण बनी।"

"फिर?"

"फिर महाराज! निराशा ने लोगों को घेर लिया। पंडित भाई तो बहुत घबराए.....और.....और कश्मीर से अपनी सारी चल संपत्ति समेट कर जम्मू और देश के दूसरे शहरों में जाकर बस गए। भला बेचारे करते भी क्या?परदेस में इसी संपत्ति से ही अपनी गुज़र बसर का जरूरी सामान खरीद कर अपना गुज़ारा चला रहे है। लेकिन कुछ अचल संपत्ति जैसे घर, जमीन, बाग और खेत खलिहानों के साथ–साथ एक बहुमूल्य और स्थायी विरसा वहीं छोड़ आए। जी हां! वो हमारे भाई जल्दी में ललद्यद को वहीं छोड़ आए। लेकिन ललद्यद कोई भूलने वाली चीज तो नहीं थी। वे तो दो भिन्न भिन्न शरीरों में एक पवित्र आत्मा का नाम था।" सैयद फज़लदीन ने लोगों की ओर देखा और अनुमान लगाया कि लोग उसकी बाते चाहे ध्यान से सुन रहे थे। परंतु उनके चेहरों पर क्रोध झलक रहा था। उसने अपनी बात चालू रखते हुए कहा– "वो पल बहुत उदासी का था ढलती सांझ में दूर पश्चिम में डूबते हुए सूर्य की लालिमा किसी निर्दोष के रक्त की तरह फैली हुई दिखाई दे रही थी। हम ललद्यद के पास बैठे कश्मीर के अंधकारमय भविष्य के बारे में सोच–सोच कर चिंतित हो रहे थे। ललद्यद अपने घुटनों पर दोनों हाथ रखकर चुपचाप बैठी लोगों की बातें सुन रही थी। उसे देखकर लग रहा था, मानों उसके चेहरे पर छाई उदासी ने सारी वादी (कश्मीर घाटी)" को अपनी लपेट में ले लिया हो।

अचानक पंडित त्रिलोकीनाथ धर बोला।

"द्यद! पंडित तो कश्मीर छोड़कर चले गए। अब तो हमारे कुछ ही घर बचे हैं। आपने हमारे बारे में क्या सोचा।"

वह उदास थी। लेकिन त्रिलोकीनाथ की बात सुनकर अचानक चौंक पड़ी। जेसे नींद में उसने कोई डरावना सपना देख लिया हो। उसने त्रिलोकीनाथ की ओर देखा और और बोली – "सुनो त्रिलोकीनाथ! मैं एक मां हूँ और मां अपना घर नहीं छोड़ती। भलाई इसी में है कि बच्चे भी मां का आँचल न छोड़ें" उसकी आवाज़ में दुख, तड़प और उदासी थी। वह रुंधे स्वर में बोली– "मैं जानती हूँ कि अब तुम्हारे पांव इस धरती से उखड़ चुके हैं लेकिन एक बात याद रखना–अपनी धरती से उखड़े हुए वृक्ष की जड़ें कभी भी परायी धरती पर नहीं लगती।"

ललद्यद की बातें सुनकर त्रिलोकीनाथ बुत्त सा बन गया। ललद्यद की आंखों में आँसू भर आये, उसने अपना दांया हाथ घुटने से उठाया और उसकी पहली उँगली दाँतों तले दबाली। हम समझ गए कि वो आजकल के हालात पर दुख प्रकट कर रही थी। सुनाते सुनाते फज़लदीन रो पड़ा। थोड़ी देर के लिए वह चुप हो गया। रुमाल से अपनी आँखें पोंछ कर उसने ठंडी आह भरी और सुनाने लगा– 'महाराज!' शायद लोग नहीं जानते कि दायें हाथ की पहली उंगली जो उसने दांतों तले दबाई थी– वह कितनी चमत्कारी थी। कहते है जब कश्मीर के प्रसिद्ध ऋषि हजरत नूरूदीन वली जिन्हें हम प्यार और आदर से नुंदऋषि कहते थे पैदा हुए तो उन्होंने कई दिनों तक मां का दूध नहीं पिया। यह देख उनके माता पिता बहुत चिंतित हुए। एक दिन ललद्यद अचानक वहां पहुँच गई। उन्हांने बड़े प्यार से मुस्कुराते हुए बच्चे को गोद में ले लिया और वही चमत्कारी उंगली उसके मुंह में डाल दी। उंगली ने मानो मां के वक्ष का रूप ले लिया और उससे दूध की धारा फूट पड़ी। तब ललद्यद ने बड़े प्यार में नन्हें से कहा – "पी ले बच्चे! दूध पीने में कैसी शर्म। अरे! यदि दुनिया में आने की शर्म नहीं तो दूध पीने में कैसी शर्म?" कहते हैं ललद्यद की बात ने जादू का सा असर किया। नन्हा नूरूदीन झट से उंगली चूसने लगा। जैसे मां का दूध पी रहा हो। जाते जाते यह भविष्यवाणी कर गई– "याद रखना। यह बच्चा कोई साधारण बच्चा नहीं। इसमें वह तेज है जो अज्ञान को जड़ से उखाड़ फेंकेगा।"

"हां बंधु! तुम ठीक कह रहे हो।" स्वामी जी ने उसकी बात की पुष्टि करते हुए कहा–"ललद्यद की यह बात बिल्कुल सच हुई और आगे चलकर हजरत नूरूदीन सूफी वली ने इस्लाम का प्रचार करके अंधकार को दूर कर दिया। लेकिन तुम त्रिलोकीनाथ की बात कर रहे थे। हां! तो फिर क्या हुआ?"

स्वामी जी की बात सुनकर वह चकित हो गया और उसका अनुमान यकीन में बदल गया कि वो संसार में ईश्वर द्वारा भेजा हुआ सच्चा, संत महात्मा है। इसीलिए लोगों के मन की बात को सहजता से जान लेता है। उसने अपनी बात जारी रखते हुए कहा– "स्वामी जी! अगला दिन बड़ा अशुभ था। प्रतिदिन की तरह हम लला आरफा के पास बैठे थे। मेरे साथ अज़ीजदीन, गुलाम मुहम्मद, रशीद वांगर, मुनीर मकदूमी, रहमान कुरेशी, रज़ब भट्ट और दूसरे कई लोग थे। पर त्रिलोकीनाथ धर, पुष्करनाथ वांचू, मक्खन लाल कौल, जिया लाल हंडू, मोती लाल भान और भी कितने लोग नहीं थे। उन्हें न देखकर हमें हैरानी भी हुई और दुख भी । बाद में पता चला कि वह भी कश्मीर छोड़कर चले गए थे। उस समय लल मां ने एक झुरझुरी ली और अपने दायें हाथ की वह चमत्कारी उंगली दाँतों तले दबा ली। तभी अचानक एक अजीब सी घटना घटी। जब मां ने वो चमत्कारी उंगली मुंह से बाहर निकाली तो उससे दूध नहीं, रक्त की बूँदें बरसात की तरह बरसने लगी। यह देखकर हम सब

बहुत डर गए। उसने वर्षों पुरानी जपमाला को हाथ में ले लिया। पक्के धागे में पिरोए जपमाला के सुंदर मनके रक्त से लथपथ हो गए थे। फिर अचानक धागा टूट गया और एक एक करके मनके गिरने लगे और उसकी उंगलियों की गति रुक गई। देखते ही देखते लल मां जपमाला के मनकों की तरह टूटकर बिखर गई।" सैयद फज़लदीन एक लंबी आह भरकर, चुप हो गया। उसकी बातें सुनकर सभी उसे विस्मय से देखने लगे।

"और अंतिम संस्कार....?" स्वामी जी ने चुप्पी तोड़ते हुए पूछा।

"मैंने इन अपने हाथों से किया है।" उसने अपने दोनों हाथ स्वामी जी को दिखाते हुए कहा।

"अब उन्हीं अस्थियों का जल प्रवाह करने आये हो।"

"जी हां।"

"पर अस्थियाँ कहाँ हैं?"

"इसी गठरी में"

"अरे भाई! तुम्हारी गठरी तो बिलकुल खाली है।"

"नहीं स्वामी जी! इसमें लल माँ की पवित्र अस्थियाँ हैं।"

पर गठरी सचमुच खाली थी। इस आशातीत दुर्धटना ने फज़लदीन को एक नयी दुविधा में डाल दिया।

परायी धरती पर अनजान लोगों की भीड़ में वह एक अपराधी की भांति खड़ा था। लोगों का क्रोध और उनकी तरह तरह की बातें सुनकर उसकी घबराहट बढ़ रही थी। वह तो वास्तव में ही लोगों में झूठा सिद्ध हो चुका था। अब करे तो क्या करे?कहे तो क्या कहे?किससे कहे?तभी उसने देखा स्वामी जी सभी को चुप रहने का संकेत करते हुए कह रहे थे– "भक्तों! शांत हो जाओ। सैयद फज़लदीन जिस पर तुम संदेह कर रहे हो उसे मेरी दृष्टि से देखो। तभी तुम्हें बात समझ में आएगी।"

स्वामी जी की बात सुनते ही लोग उनकी आंखां में आखें डालकर देखने लगे। उन्हें यूं महसूस हुआ जैसे उनके सामने स्वामी जी नहीं अपितु फज़लदीन खड़ा हो। कानों में स्वामी जी की आवाज टकराई। "भक्तों! लल्लयोगेश्वरी, ललद्यद, लला आरिफा एक ही शक्ति का नाम है। एक सांझी सभ्यता का केन्द्र बिंदु। यह भी सच है कि उसकी साढ़े छः सौ वर्ष से भी अधिक आयु थी। फिर अचानक उसकी मृत्यु कैसे हो गई?फज़लदीन ने बिल्कुल सच कहा हैं लेकिन आपके सामने प्रश्न यह है कि अस्थियाँ कैसे खो गई?" लोगों ने एक दूसरे की ओर देखा। मानो वे बात की तह तक पहुँचने का यत्न कर रहे हों।

स्वामी जी की आवाज ने उन्हें अपनी ओर खींचा– "मैं पहले भी कह चुका हूँ, कि लल्लयोगेश्वरी कोई साधारण स्त्री नहीं थी। वह एक आलौकिक शक्ति थी। उसके सिर पर अगर पानी से भरा मटका भी फूट जाता तो पानी बहता नहीं। ज्यूं का त्यूं सिर पर टिका रहता था वह अगर तपे हुए तंदूर में कूद जाती तो वह तंदूर भी ठंडा हो जाता। वह कश्मीर की मिट्टी से ही प्रकट हुई थी। भला यह कैसे हो सकता था कि स्वर्ग सिधारने पर उसकी आत्मा तो कश्मीर में ही रहती और अस्थियों का जल प्रवाह कश्मीर से बाहर होता?अरे भक्तों! शरीर और आत्मा का बड़ा घन्ष्ठि संबंध होता है। फिर ऐसा पवित्र शरीर जिसमें लल्लयोगेश्वरी की आत्मा सैकड़ों वर्ष रही हो। उसकी अस्थियाँ उस की मिट्टी से दूर कैसे जा सकता थीं उसे अपनी अस्थियों का जल प्रवाह कश्मीर से बाहर कदापि मंजूर नहीं था।"

भीड़ में खड़े लोगों का ध्यान प्रवचन की ओर था। लेकिन नज़रों में सैयद फज़लदीन का चेहरा समाया हुआ था। जिसका व्यक्त्वि अब कुछ कुछ स्पष्ट हो रहा था। एक भला सा पुरुष। सत्यवक्ता! मनुष्यता से भरपूर...।

"भक्तों! यह बहुत अनोखी कथा है। ध्यान दें– जब अस्थियों के जलप्रवाह की बात वितस्ता (जेहलम)" तक पहुंची तो उसके शांत पानी में एक जोर की लहर उठी और जिस गाड़ी में फज़लदीन अस्थियों की गठरी लेकर बैठा था। उसी में से वितस्त का पानी लल्ल योगेश्वरी की अस्थियों बहा कर ले गया। मैंने पहले भी कहा था कि सैयद फज़लदीन ईश्वर का एक सच्चा भक्त हैं उसे इस घटना का अनुमान तो हुआ होगा। लेकिन सच तो यह है कि वह इस बात को समझ नहीं पाया। उन अस्थियों का जल प्रवाह तो पहले ही इसके हाथों वितस्ता यानि जेहलम में हो चुका हैं अस्थियाँ तो कश्मीर से बाहर आई ही नहीं। यहाँ तो केवल खाली गठरी ही पहुँची है।"

फिर वह सैयद फज़लदीन से बोले– "क्यों मित्र क्या मैं ठीक कह रहा हूँ?"

तभी उसे याद आया पांद्रियेठन में अस्थियों वाली गठरी में कुछ हलचल सी हुई थी। ऐसा लगा था मानों गठरी पानी में बह रही हो और वह स्वयं भी पानी में डूब रहा हो।

"क्या यह जेहलम (वितस्ता) का पानी था। जो अस्थियाँ बहा कर ले गया?वह अपने आप पर हंस पड़ा और उसने अस्थियाँ वाली गठरी को झाड़ कर कंधे पर रख लिया और सामने खड़े लोगों की ओर देखा जो अपने से ही लग रहे थे अनजान नहीं।"

अनुवाद–नीरू शर्मा

सम्पर्क : हरभजन सिंह 'सागर' आलोचा बाग, पो.आ. सेंट्रल मार्केट, श्रीनगर कश्मीर 190001

प्रो. चमन लाल सप्रू



8 मार्च 2013 शिवरात्रि के पावन पर्व पर विशेष

अलीमरदान खान रचित फारसी में शिव स्तुति



अली मर्दान खान जो सतरहवीं शताब्दी में मुगल दरबार की ओर से कश्मीर के गवर्नर नियुक्त थे, उनके साक्षात अनुभव की देन है प्रस्तुत कविता।

अली मर्दान खान शालामार बाग के पास हारवन में रात के समय घूम रहे थे जहां से महादेव पहाड़ी और उसकी चोटी साफ दृष्टिगोचर है। वह समाधिष्ठ हुये, उन्हें सामने नन्दी पर सवार उमा सहित भगवान शिव का साक्षात्कार हुआ। उनकी अंतर आत्मा जाग उठी और भाव उमड़ पड़े और इस फारसी भाषा मे शिव स्तुति ने जन्म पाया।

रसखान, रहीम और मलिक मुहम्मद जायसी की भांति खान साहिब साधक थे और हिन्दू धर्म ओर पौराणिक परम्परा से भली-भांति परिचित थे। ईश्वर का अनुग्रह किसी पर भी हो सकता है और इसमें उसके धर्म का कोई संबंध नहीं होता।

*इस कविता का चार दशक पूर्व डॉ. शशिशेखर तोषखानी ने हिन्दी में पद्यानुवद किया था। उसकी पहली पंक्ति इस पकार है। **वह महेश्वर था कि जिसका शर्वरी को दर्श पाया।** इसे मैंने 'मार्त्तण्ड' के शिवरात्रि अंक में छापा था। अब अप्राप्य है।*

मूल फारसी

हुमा असले महेश्वर बूद
शबशाहे कि मन दीदम
गज़न्फर चर्म दर बर बूद
शब शाहे कि मन दीदम।।1।।

ज़ि भसमश जाम-ए-बर तन
ज़ुनारश मार बर गर्दन
रवानश गंग बर सर बूद
शब शाहे कि मन दीदम।।2।।

सेह चश्मश बर जबीन दारद
ज़ि मेहरो माह रोशन तर
सेह कारण दस्त बसतह बूद
शब शाहे कि मन दीदम।।3।।

ब दस्तश आब-ए-कौसर
हिलालश ताज बर सर बूद
व बेख नाकूसि नीलोफर
शब शाहे कि मन दीदम।।4।।

उमा अज़ सोइ-चफ-बिंगर
सद खुरशीद ताबान तर
सवारश कुल्ब-ए-नर बूद
शब शाहे कि मन दीदम।।5।।

अजब सन्यास-ए-दीदम
नमो नारायणा गुफतम
ब खाके पाय बोसीदम
शब शाहे कि मन दीदम।।6।।

निगाहे बर मने मिस्कीन
नमूद अज़ चश्मि ताबान तर
मकानश लामकान तर बूद
शबद शाहे कि मन दीदम।।7।।

मनम मरदान अली खनम
गुलामे शाहि शाहानम
अजब इसरार मे बीनम
शब शाहे कि मन दीदम।।8।।

हिन्दी अनुवाद

रात को मैंने जिन्हें देखा शायद वह भगवान महेश्वर थे
उन्होंने हाथी की छाल के वस्त्र धारण किये थे
रात को मैंने जिन्हें देखा शायद वह महेश्वर थे। 1 ।।

सारे शरीर पर भस्म मला था।
गले में सांप को यज्ञोपवीत के रूप में पहन रखा था
और उनकी जटाओं से गंगा जी बह रही थी।
रात को मैंने जिन्हें देखा शायद वह महेश्वर थे। 2।।

उनके मुखड़े पर तीन नेत्र थे,
जो कि सूर्य और चन्द्रमा से भी अधिक चमकते थे।
उनके सामने तीनों कारण ब्रह्मा, विष्णु और महेश
हाथ जोड़े खड़े थे।
रात को मैंने जिन्हें देखा शायद वह महेश्वर थे। 3।।

उनके हाथों में अमृत कलश था
और कमल तथा शंख था
उनके माथे पर पहली चन्द्रकला विराजमान थी।
रात को मैंने जिन्हें देखा शायद वह महेश्वर थे। 4

बांई ओर उमा जी बैठी थी
जिसका तेज सैकड़ों सूर्यों की चमक को मात करता था
और उनकी सवारी के लिए वृषभ था।
रात को मैंने जिन्हें देखा शायद वह महेश्वर थे। 5।।

इस प्रकार मैंने एक अपूर्व संन्यासी के दर्शन किए।
मेरे मुंह से नमो नारायण के शब्द फूट पड़े।
मैंने उनके चरण कमलों की धूल को चूमा।
रात को मैंने जिन्हें देखा शायद वह महेश्वर थे। 6।।

उन्होंने मुझ दीन पर अपनी तेजोमय दृष्टि डाली,
उनके निवास की सीमा अनन्त और अपार थी।
रात को मैंने जिन्हें देखा शायद वह महेश्वर थे। 7।।

कल अली मर्दान खान ने जो कि राजाओं के राजा का दास है,
उस रात यह विचित्र रहस्यमय दृश्य देखा।
रात को मैंने जिन्हें देखा शायद वह महेश्वर थे। 8।।

आभार

हिन्दी कश्मीरी संगम संरक्षक मंडल

श्री रूपकृष्ण कारिहलू सुपुत्र स्व. पं. महेश्वरनाथ कारिहलू मूलतः मलिक आंगन, फतेहकदल, श्रीनगर (कश्मीर) निवासी

तथा

कश्मीरी सभा कलकता ने हिन्दी कश्मीरी संगम के लिए रू. दस–दस हजार की धन राशि भेज कर संगम के संरक्षक परिवार में सम्मिलित होकर हमारा उत्साह बढ़ाया है। इससे पूर्व श्री मोती कौल अध्यक्ष *A.I.K.S.* मुम्बई, श्री सोमनाथ काचरू, नोएडा तथा श्रीमती जया कौल, इन्द्रप्रस्थ विस्तार पूर्व दिल्ली हिन्दी कश्मीरी संगम के संरक्षक बन चुके हैं।

हम उपर्यूक्त दानदाताओं के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करते हुए हमारे उद्देश्यों को क्रियान्वित करने के लिए उन सभी महानुभावों से भी विनम्र निवेदन करते हैं कि वो भी यथासंभव दान राशि **हिन्दी कश्मीरी संगम के नाम से चैक अथवा बैंक ड्राफ्ट** द्वारा भेज कर कृतार्थ करें।

निवेदक :
डॉ. बीना बुदकी
सचिव हिन्दी कश्मीरी संगम,
13 बी, ई 3, शताब्दी विहार, सेक्टर 52, नोएडा 201307



मूल कश्मीरी–कृष्ण जू राज़दान



हिन्दी पद्यानुवाद–मथुरा दत्त पाण्डेय

(हेरथ) शिवरात्रि के पावन पर्व पर विशेष

शिव आरती

ब्यल तय मादल व्यन ग्वलाब पम्पोशि दस्तय।
पूज़ायि लागव परम शिवस शिवनाथस तय।।

मादल, बेल, गुलाब, व्यन और कमल के फूल।
लेकर चाहूँ पूजना शंकर मंगलमूल।।

जटा मुकट् प्यठ् गंगा वसान छस तय
दीवी त् दिवताह वेष्ण् ब्रह्मा छिस दस्त बस्तय।
बक्ती बावुक जयजयकार ऑसिन तस तय
पूज़ायि लागव परम् शिवस शिवनाथस तय।।

बहे गंग जिसकी मुकुट–सी जटा से
विष्णु–ब्रह्मा भी करते जिसका नमन।
शुभंकर उसी शंभु को भक्तिपूर्वक कहूँ जय,
चढ़ाऊँ भाव–भीने सुमन।।

पम्पोश् पादव सूत्य यितम असतय असतय
च़रनन बो वंदय ज़ुव जान ह्यथ वॉलिज वसतय।
यिन चानि सुत्यन पोन्य बुज्यम नागरादस तय
पूज़ायि लागव परम शिवस शिवनाथस तय।।

चरण–कमल धर धीरे–धीरे काश। कभी तुम आ जाओ।
मैं सर्वस्व लुटा दूँगा उन चरणों पर खुश होकर।
शुभुनाथ! तेरे आते ही घर के सूखे सोतों से
फिर से बहने लग जाये तब पानी उमड़ उमड़ कर।।

दयासागर लोल वुज़ियायि कॅरिन मस तय
हा पोशमते होश डॅल्यमत्य छि थव द्यान ह्यस तय।
असार समसार छॅलरावान सोर रोजि कस तय
पूज़ायि लागव परम शिवस शिवनाथस तय।।

श्रद्धा–प्रेमजनित मस्ती से मैं बना तुम्हारा मतवाला,
पर फूलों के शहज़ादे। तुम मेरी होश न हरना।
यह संसार असार रहा भरा हुआ छल–छन्दों से
बाजी कहीं न हार चलूँ, गफ़लत में मुझे न रखना।।

पॉर्य पॉर्य लगना शिव शंकर शिव नावस तय
दर्शन चान्युक छुम यॅच़ लोल सूत्य हावस तय।
टोठतम सदा शिव ज़गत ईश्वर छुस बेकस तय
पूज़ायि लागव परम शिवस शिवनाथस तय।।

तेरे दर्शन की अभिलाषा बनी हुई है मन में
देकर उसे कृतार्थ करो मुझे सदाशिव! जगदीश्वर।
जी करता है बलि जाऊँ मैं तुम पर हे शिवशंकर।
मुझे भरोसा है तेरा, क्षमा करो प्रभु, खुश होकर।।

अमरनाथस नीलकंठस कल वंदस तय
व्यचा़र सूत्यन बखत्यन प्यठ आर यियनस तय।
कृष्ण ज़ुव अर्पन गछ़ि शिव नावस तय
पूज़ायि लागव परम शिवस शिवनाथस तय।।

हे अमरानाथ! हे नीलकंठ! मैं तरे शुभ चरणों पर,
करूँ अर्चना खुशी खुशी से अपना शीश चढ़ाकर।
करूँ कामना–बना रहे भक्त कृष्ण पर दयाभाव,
मुझमें तेरी चाह जगी और जगा विश्वास अमर।।

सौजन्य – भूषणलाल राज़दान

शंकराचार्य मन्दिर श्रीनगर



मारा दायरे ग़ैर में - अपने वतन से दूर
- ग़ालिब

श्याम कौल कश्मीर के ख्यातनाम पत्रकार थे। प्रादेशिक एवं राष्ट्रीय स्तर के अनेक पत्रों के संवाददाता होने के अतिरिक्त वरिष्ठ स्तंभकार भी थे। गत मास उनका देहान्त हुआ और कश्मीर के पत्रकार जागत में एक बड़ा शून्य पैदा हुआ। श्यामजी एक सफल उर्दू कवि भी थे। प्रस्तुत है उनकी वर्तमान संदर्भ में नज़्में। -संपादक

श्याम कौल की उर्दू कविताएं

हम थे तो फूटती थीं रहमतें
जबीन कश्मीर से
रहमतें रवादारी की, भाईचारे की,
हमसायगी, प्यारो मोहबबत, यारी की,
बाहमी रिश्तों में खुलूस, ईमानदारी की,
अमनो सकूं, अहिंसा की, अमलदारी की,
कत्लों खूं, तशद्दुद से, दुश्मनदारी की,
आला कदरों, रिवायत की, आबयारी की,
नई पौध के कल की तैयार की,
वह रहमतें जो खज़ीना थीं **ऋषिवारी** की!

●●●

हम थे, निखार था जिंदगी की हर तस्वीर में
इल्मों दानिश के चर्चे थे दानिशकदों में
फिक्रोफन पनपता था थियेटरों, सिनेमा घरों में
तख्खयुल शायरों के परवाज़ करते थे मुशायरों में
रकसो नग़मात के समां थे शादियों, त्यौहारों में
सक़ाफत परवान चढ़ती थी मजलिसों, इजतेमाओं में
कलाकारों, आदीबों की तौक़ीर थी महफिलों में!

●●●

हम क्या उजड़े कि आवाज़ दी किसी ने सरहद पार से
'इन्हें' दहशतज़दाह कर दो, भगा दो घरों से इन्हें
कि ये कांटें हैं राह के निज़ामे नव की तकमील में
वतन बदर कर दो, भाईचारे की इस मनहूस अलामत को
कि तलू अब होगा यहां सूरज, तक़सीम का तफरीक का
मिटा दी जाएगी आला रिवायत की तारीख यहां से
और लिखी जायेंगी खूने इनसां की नई दास्तानें

तोड़ दो सिलसिला वक्त का, मोड़ दो तारीख का धारा
कि नफरतों, तआसुबों, मजुहबी जुनूं का रेला आया है
यह इन्सानियत, ऋषियत, रवादारी, क्या रट लगाई है
झुकाओ सिर अपने कि अब बंदूक की सरदारी है
नज़र नीची कि अब तशद्दुद की अमलदारी है
और तुम, तुम्हारा वजूद अब इस जमीं पर भरी है।

●●●

हज़ारहा सूरज उगे, बेशुमार चांद डूबे
और तिनका तिनका बिखरे
काले कोसों फैले
कश्मीर की कोख से जन्में!
ये खानमां, बेसरो सामां लाड़ले
जो परवान चढ़े थे, 'मोज कॅशीर' की बाहों में
कोंपल कोंपल बहारो की, हवाओं में
चिनारों की चुमकारती छाओं में,
और झरनों की खुशआहंग सदाओं में!
वे लाड़ले झुलस रहे हैं आज
आग उगलती, शोले फुंकारती गर्मियों में
पथरीली रेतीली, बेनाम वुस्सतों में
जहाँ झुलसे हैं उनके ख्याल भी, ख्वाब भी
और राख हो रही है उम्मीदें, एक एक करके!
लेकिन आज भी वे अपनी पथराई, मुरझाई नजरों से
टिकटिकी बांधे हैं दूर पहाड़ों की जानिब
कि शायद कोई इशारा, कोई बुलावा, इस पार आए
अपने घर आने के लिए, कोई पयामे यार आए!!

लिप्यांतर-आंकार काचरू

बालकृष्ण संन्यासी

आकाशवाणी द्वारा आयोजित राष्ट्रीय कवि सम्मेलन वाराणसी में कवि द्वारा सानुवाद पढ़ी गई।

मॉज मॅछ़िज



नूर हलम छुय असवनि ह्वंजि छख
वसवॅन्य आरॅ तुलान छी व्यूर
मागचि छटि मंज़ शीन शहर छख
हारस मंज़ बरजसत फुलय
श्रावुन छख अमृत दर्शुन छख
हरदॅ ग्वन्यन हॅज़ छख अंबार
महानदी कावेरी कृष्णा
ब्रह्मपुत्र वितस्ता मॉज
गुफतारा, ल्वकचारा चोनुय
चॉनी स्वर लय चॉनी ताल
ड्यक बॅज ज़गतस रुत कांछान छख
मॉज मॅछ़िज छख सरव शुहुल
दीवी छख द्वहदि शपूज़ॅन्य छख
क्वह त संगर चॉन्य चावान शीर
रंगाबरॅग्य वरदन लॉगिथ छख
ज़न त समन्दर चेय छी नॉल्य
कारॅतिकच छख जून चे छ्वपॅ छय
नारॅ सुभाषिन्य तिलकन्य छख
मालि जॅरिथ छी जाफॅर्य पम्पोश
ॲष्क सुभाषिन्य तिलकन्य छख
मालि जॅरिथ छी जाफर्य पम्पोश
ॲष्क पेचान क्वंगपो शग्वलाब
ड्यकॅ टिकॅ चोन कश्यप रॅयोश नुंद रॅयोश
संत कबीर अगस्त रेशि
विन्द्याचल महेन्द्र हिमालय
अरावली चोनुय अनहार
सोन्तॅ फुलय दिवय अस्तानन

ममतामयी माँ

रोम रोम रोमांचित करते
मां मुझको झरने तेरे
माघ मास में शीत लहर हो
बर्फानी चादर ओढे
फूलों का यौवन तुम ही हो
महक रहा तुम में आषाढ
हंसमुख हो तेजस्वी मां हो
हर ऋतु में उपजाऊं खेत
सावन में अमृत वर्षा हो
शरद ऋतु तेरा सैन्दर्य
बोल तुम्हारे लय भी तेरी
तेरी ही माधुर्य घिरा
महानदी कावेरी, कृष्णा,
ब्रह्मपुत्र, वितस्ता मां
भाग्यलक्ष्मी स्नेहमयी हो
कड़ी धूप में हो छाया
पहनावे रंगों से सुशोभित
तेरे समुद्रवसने मां
तेरे ही पर्वत स्तनों से
दुग्धपान हो रहा यहां
विश्व शांति की ज्योति जलाई
तुम ने है सदियों से मां

पूजन मां हो रहा तुम्हारा
हर क्षण हर पल तेरा जय
तुम ही हो मां तिलक का नारा
सुभाष बोस का दृढ संकल्प
माला जो पहने हो उसमें
गेंदे, केसर, कमल, गुलाब
माथे के टीके हैं तेरे
ऋषि कश्यप, नुन्द, अगस्त्य, कबीर
अरावली, महेन्द्र हिमालय
विन्ध्याचल मां की पहचान
वासंती पुरवाई, मेले
मां के हांठों की मुस्कान
बुद्ध, नानक, चिस्ती तुम से हैं
तुम से है अश्फाकउल्लाह
बाज़ गुरुगोविंद सिंह के तुम
तीर तुम्हीं हो अर्जुन के
ज्ञान स्रोत हो ध्यान मग्न हो

चान्यन वुठनय हुंद कुमजार
बुद्ध, नानक, चिस्ती च़ेय थन पेयी
च़ेय ज़ामुत अशफाक उल्लाह
पॉज़ गुरु गोविन्द सुंद चुय छख
चुय छख अर्ज़न दीवुन तीर
ग्यानुक आगुर द्यान मगन छख
मॉज मोदर वॉणी चॉन्य वीद
अज़मथ चॉन्य ललव ख्वनि वीरव
हीन ग्यवान अनहर अरमान
शोज़ छख, मायि बॅरच, रच़ ह्यॉच छख
तिन कॅह कॉली हंज़ छख रफ्फ
दुर्गा छख गंगा माता छख
दज़वनि अफगन क्वंडच छख जूत्य
भरतन्य छख धरती भारत छख
रमन रेशिन्य अरबिनदन्य वॉर
बैंकिम चंदृन्य मनि कामन छख
चिन्नमा झांसी हुंद ज़ोर
इंद्रपरस्त, बुद्ध गया, अयोध्या
मथरा बिन्द्राबनर अजमीर
चॉनी आंगन, चॉनी वथ कथ
चॉनिय प्रच़ंड़ चॉनी तस्वीर
मोर च़े छिय ख्वनि व्वसि छख आमच़
ओबरचि पख छय छख वुज़मल
ज़लवॅन्य ज़लॅवन्य लोल गज़ल छख
डल क्ष्यलॅ वॅथरस मंज़ पम्पोश
रुस्य कचन हुंद च़ंच़ल मन छख
स्वंदर वन छख, छख वन हॉर
जलियानवाला बागॅच कथ छख
ताजमहल छख छख जूनॅ गाश
चानि प्रभातचि प्रव ॲस्य सॉरी
चॉनी शामुक जूल यकुत
चान्य वरासत भीम, शिवाजी
अभिमन्यू ओबदुल हमीद
चॉनिस सुबहस शामस कुस फरि
युस फरि नारस बुथि दियि पान
मॉज बखश पॅद्य म्यॉन्य प्यवान छिय
सब्जारस चॉनिस लगॅ पॉर्य

वेदों के उपचारक हो
वैभव मां का गोद में लेकर
बलिदानी हैं वीर अनेक
रांझें हीर की गाथा गाती
ममतामयी हो भारत मां
पर हो काली, दुर्गा भी हो
प्रचंड अग्नि की, ज्योति भी
भरत की धरती भारत हो मां
रमन ऋषि, अरविंद की मां
बंकिम की हो मनोकामना
झांसी, चिन्नमा का ज़ोर
इन्द्रप्रस्थ, बौद्ध गया, अयोध्या
मथुरा, वृन्दावन, अजमेर
प्रांगन और पहलियों तेरी
मोर मोरोनियां तेरी शान
झील डल में खिला कमल हो
बादल से निकली बिजली
प्रेम से प्रेरित लिखी गज़ल हो
दहाडते शेर की गर्जन भी
हिरनी हो मां, चंचल मन हो
सुन्दर वन हो, वन पक्षी
शरद चांदनी, ताजमहल हो
जलियांवाला बाग का रूप
तेरे भोर की किरनें हम सब
तेरा प्रज्वलित सायं हम
तेरे ही दर से आये हैं
अभिमन्यु, अब्दुल हमीद
भीम शिवाजी तेरा बल है
आतंकी भयभीत हुए
सुबह हो या हो शाम या दिन हो
कौन करेगा तुझ पर वार
ऐसा जो भी होगा कोई
झुलसित होगा बारंबार
मां पग मेरे पड़ते तुम पर
हर क्षण हर पल, क्षमा करो
क्षमा करो मां वारी जाऊं
तेरी हरियाली पर मैं ।

सम्पर्क : मकान न. 61 ए/1 बसंत नगर, गली न. 3 (पलोरा) जानीपुर, पो. रूपनगर, जम्मू

मनोज शर्मा

कश्मीरी विस्थापित

विस्थापित
ठहराए जाते हैं जिम्मेदार ट्रैफिक बढ़ने के
विस्थापित
ठहराए जाते हैं जिम्मेदार मंहगाई के
विस्थापित जिम्मेदार ठहराए जाते हैं
एक अर्से से शहर की आंतें निकालने में लगी गुंडागर्दी के
बढ़ जाने के भी
मैटाडोर में किसी कश्मीरी लड़की से
जलील छेड़खानी के भी
विस्थापित ही हैं जिम्मेदार
विस्थापित
बन चुके हैं फिजूल में बतियाने का विषय
बन चुके हैं तकिया कलाम
उनसे बचकर रहने के मनसूबे बनाए जाते हैं।

बेटी नाज़ों से पली–बढ़ी
राशन की कतार में खड़ी
पहुंच गई है कहीं दूर–

बेघर होने के बावजूद
नहीं हुई हैं यादें बेघर
बेघर नहीं हुई त्यौहार मनाने की उमंग
नहीं छूटा
एक सांस में दौड़कर टीला चढ़ने की शर्त का रोमांच

बेघर नहीं हुई।
सांसों में बसी फूलों और घास की महक
सहेलियों संग जुड़ी हंसीली फब्तियां भी
नहीं हुई हैं बेघर

बेघर नहीं हुआ
उचककर भतीजे के लिए तोड़ा
दुपट्टे से साफ किया सेब का रंग
बेघर नहीं हुई उस शरारती टहनी की चुभन जो दिन में कई–कई बार बालों में उलझ जाती थी

बिना कोशिश किए ही
सोचती है बेटी
ऐसा बहुत–बहुत कुछ
बेघर नहीं हुआ है।

भरपूर गर्मी में उमस से परेशान होकर भी
खुश हैं जम्मूवासी
भाग जाएंगे पंडित
मर जाएंगे लू से
हो जाएगा इनका बुरा हाल
सत्यानाश
पर, विस्थापित मरते नहीं लू से
लड़ने लग पड़े हैं वे
ऐसे हरेक मौसम से
जो उनके खिलाफ खड़ा है।

बतियाती है विस्थापित सहकर्मी
कुछ और ही होता था कश्मीर में
भारत और पाकिस्तान के बीच का
क्रिकेट मैच

बताती है चश्मा उतार वह
कि जीत के बावजूद
पहरा लाज़िमी रहता था
पूरे चेहरे पर
बताती है विस्थापित लड़की
चिंहुकता सच
कल, जीतने पर पहली बार
गुपचुप से रहने वाले पापा
गली में आ गला फाड़ चिल्लाए थे।

सोचते हैं लोग
पता नहीं कैसे
किसी गंदे से मुहल्ले के सड़ांध मारते घर में
गालियां ढोते मकान मालिक की पतझड़ में सुर्ख होते चिनारों तक
गिर रही बर्फ के फाहों तक
मुझे इसमें कुछ भी अटपटा नहीं लगता।

सम्पर्क : नाबाड बैंक, साऊथ ब्लॉक, बाहू प्लाजा, जम्मू

जवाहरलाल कौल



कश्मीर में बेगानी कश्मीरी

अपने बेटे के विवाह समारोह का निमंत्रण पत्र पाने के पश्चात मेरी जान–पहचान की एक महिला श्रीमती जंयती पंत ने कहा कि आप की भाषा तो मैंने लगभग पूरी तरह समझ ली। मैंने पूछा कैसे? तो जवाब मिला कि इसमें कौन सी बात है प्राकृत–अपभ्रंश तो मैं काफी कुछ समझती हूं। निमंत्रण पत्र मैंने दो भाषाओं में छापा था कश्मीरी और अंग्रेजी। स्वर्गीय जयंती जी की शिक्षा–दीक्षा शांति निकेतन में हुई थी और उनके दावे को नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता था। मुझे आश्चर्य इस बात पर हो रहा था कि जो बात मुझ जैसे कश्मीरी भाषी को सहज रूप से मालूम होनी चाहिए थी उसे सुनकर मैं चौंक गया। यह बात केवल मुझ पर ही नहीं लागू होती मेरी आयु और मुझसे कम उम्र के अधिकतर कश्मीरियों के लिए भी सच है। अचानक मुझे याद आया कि मेरे बचपन में मेरे गांवों में किस प्रकार की कश्मीरी बोली जाती थी। मेरा गांव दूर–देहात नहीं है। श्रीनगर से बीस ही मील दूर मानसबल झील के किनारे पर स्थित है। इसलिए कहीं से भी बदलते हुए वातावरण से कटा हुआ नहीं था। याद करते ही कुछ वाक्यों की रचना अपने आप मन में हुई। गछ्व वन, तति अनव पन त काठ, अति छिय,....। प्रसंग की जानकारी होते संस्कृत की थोड़ी–बहुत जानकारी रखने वाले व्यक्ति के लिए इन वाक्यों को समझना कोई कठिन काम नहीं, जैसे जयंती पंत के लिए कठिन नहीं था। ऐसा नहीं कि तब कश्मीरी में अरबी–फारसी के शब्द नहीं आए थे। लेकिन वे शासन और प्रशासन या मजहब से जुड़े शब्द थे जिनका उन विशेष परिस्थितियों का आना स्वाभाविक होता है। भाषाएं कभी ठहरी हुई झीलें नहीं होतीं, बहती हुई नदियां होतीं हैं। इनमें यात्रियों, व्यापारियो, शासकों और धार्मिक प्रचारकों के कारण नए शब्दों का रूप और अर्थ तो घिस–घिस कर भी बदल–बदल जाता है। इसे भाषा का स्वाभाविक प्रवाह या विकास कहा जा सकता है। पठानों और मुगलों के शासन में कई तरह के प्रशासनिक शब्दों का समावेश हो चुका था। अधिकतर शब्द भूमि और कृषिकर्म से जुड़े थे। ज़मीन, जायदाद, काश्त, लगान, देह, शहर, इंतिकाल, इंदराज, के बावजूद धानि (धान्य) कुलगाम, वोछ (वत्स, बछड़ा), द्वद (दूध), 'ग्यव़ (घी) और फल' भाषा के मूलाधार को बताने के लिए उपस्थित थे। सरकारी पैमाइश भले ही मन में हो गई थी, आम–जन के लिए खार (खार्रि) ही मान्य माप थी।

कश्मीरी भाषा के मूल स्रोत के बारे में अब तक बहस जारी है कि वह संस्कृत परिवार की भाषा है कि नहीं। यह बहस इसलिए चल रही है कि कश्मीरी के बारे में साम्प्रदायिक बहस से आगे जाकर बहुत कम गंभीर शोध हुआ है जितना कुछ हुआ भी है उसको भी राजनैतिक कारणों से नज़रअंदाज़ किया जाता रहा है।

कश्मीरी भाषा के मूल स्रोत के बारे में अब तक बहस जारी है कि वह संस्कृत परिवार की भाषा है कि नहीं। यह बहस इसलिए चल रही है कि कश्मीरी के बारे में साम्प्रदायिक बहस से आगे जाकर बहुत कम गंभीर शोध हुआ है जितना कुछ हुआ भी है उसको भी राजनैतिक कारणों से नज़रअंदाज़ किया जाता रहा है। संस्कृत मूल के पक्षधर और उसके विरोधी, दोनों एक बात में सहमत लगते हैं कि कश्मीरी का दरदी भाषा के साथ गहरा रिश्ता रहा है हलांकि कश्मीरी और कश्मीरियों का भारतीय मूल नकारने के जुनून में एक प्रोफेसर साहब इसके मध्य–एशियाई मूल को साबित करने के लिए तर्कहीनता की सारी सीमाएं लांघ गए हैं। ऐसे अपवादों को मनोरंजन की कोटि में रखते हुए अगर हम यह मान लें कि दारदी और कश्मीरी के प्राचीन रिश्ते रहे हैं तो भी इस आधार पर कश्मीरी को संस्कृत से अलग नहीं किया जा सकता है। ग्रियरसन, जिन्होंने न तो संस्कृत का पर्याप्त अध्ययन किया था और न ही उन्हें प्राकृत और अपभ्रंश भाषाओं के विकास की पर्याप्त समझ

थी, यह नहीं जान पाए कि दारदी अपने आप में भी संस्कृत मूल की ही भाषा है। दाददी के जो रूप अब तक पाकिस्तान और अफगानिस्तान के दूर–दराज़ सीमावर्ती इलाकों में बचे हैं उनमें अब भी इसके प्रमाण मौजूद हैं। गहन अनुसंधान के बिना दारदी और कश्मीरी के रिश्तों से इतना ही नतीजा निकाला जा सकता है कि ये दोनों भाषाएं अपनी आरंभिक विकास–यात्रा में सहचरी रही हैं और दोनों ने इस दौर में आसपास की बोलियों से कुछ ऐसे शब्द भी प्राप्त किए होंगें जिनका मूल हमें संस्कृत में नहीं मिलता फिर भी बीसवीं सदी के आरंभ तक भी कश्मीरी अपने मौलिक स्वरूप को बनाए रखने में सफल रही। यही बात दारदी बोलियों के बारे में भी सच है जिनमें इस्लामीकरण के बाद भी अपने मौलिक तत्व बचे रहे। महत्वपूर्ण है कि कश्मीरी मे विदेशी भाषाओं के प्रभाव की जो गति मुस्लिम शासन के पहले आठ सौ सालों में रही उससे अधिक केवल पिछले सौ सालों में रही और सौ वर्ष की इस अवधि में भी भारत की स्वतंत्रता के पश्चात पच्चास वंर्ष का कालखंड तो कश्मीरी भाषा में असाधारण प्रत्यारोपन का समय रहा है, जिसमें ने केवल योजनाबद्ध तरीके से भाषा को अपने मूल से हटाने और उसमें ऐसे शब्द और मुहावरे आरेपित करने का व्यापक कार्यक्रम चलाया गया जिनसे कश्मीरी की असली पहचान ही कठिन हो जाए।

पहचान बिगाड़ने की यह मुहिम केवल भाषा के स्वाभाविक चरित्र को नष्ट करने तक ही सीमित नहीं थी अपितु स्थानों के नाम भी इस तरह बदले जाने लगे कि वे अपने इतिहास से कट जाएं। श्रीनगर का सिरीनगर होना एक स्वाभाविक प्रक्रिया है और उसी तरह अवंतिपुर को लोगों का वूंत्यपोर कहना भी, लेकिन अनंतनाग को इस्लामाबाद घोषित करना प्रायोजित प्रत्यारोपन ही हैं लेकिन इस अभियान का सबसे कुटिल और प्रतिशोधात्मक पहलू तो कश्मीरी की लिपि के बारे में है। कश्मीरी की सही लिपि विकसित करने का अवसर शायद राजनैतिक उथल–पुथल के कारण यहां के लोगों को नहीं मिला। लेकिन कश्मीरी के लिए सब से निकट और अनुकूल लिपि बनने की क्षमता है शारदा में। गुरमुखी और वर्तमान तिब्बती एवं बंगला का आधार भी यही शारदा लिपि ही है लेकिन क्योंकि शारदा संस्कृत भाषा परिवार की लिपि थी और इससे कश्मीरी का अपनी प्राचीन ज़मीन से गहरा रिश्ता पुनर्स्थापित होने की संभावना थी इसलिए उसकी उपयोगिता को दराकिनार करके फारसी–अरबी लिपियों के दायरे में ही हल खोजने की बेकार कोशिश होने लगी। एक कामचलाऊ लिपि गढ़ भी ली गई, लेकिन कुछ सालों तक स्कूलों में पढ़ाने के बाद छात्रों और अभीभावकों ने ही नहीं, अध्यायपकों ने भी हाथ खड़े करके इससे किनारा कर लिया। कश्मीरी साहित्य और प्रकाशन को भारी क्षति होने के बावजूद यह हठ जारी है। कश्मीरी पर उर्दू सवार हो गई और आज कश्मीरी एकमात्र प्रादेशिक भाषा है जिसमें कोई प्रशासनिक वैज्ञानिक या वित्तीय काम नहीं होता और वह प्राचीन विकसित भाषा होने के बावजूद एक बोली बनकर रह गई है।

जिस स्थिति में कश्मीरी को योजनाबद्ध रूप में बरबादी की ओर ले जाया जा रहा है उससे यही लगता है कि लोग कश्मीरी से मुक्ति ही चाहते हैं, तभी तो उसे धीरे–धीरे सार्वजनिक जीवन – प्रशासनिक, वित्तीय वैज्ञानिक क्षेत्रों – से बहिष्कृत किया जा रहा है और उर्दू को लोगों पर थोपा जा रहा है उर्दू को कश्मीरी पर इस हद तक प्राथमिकता दी जाती है कि लोग लोकप्रिय शब्दों को भी भूलते जा रहे हैं।

सवाल उठता है कि क्या कश्मीर घाटी के लोग अपनी भाषा से प्यार नहीं करते। जिस स्थिति में कश्मीरी को योजनाबद्ध रूप में बरदादी की ओर ले जाया जा रहा है उससे यही लगता है कि लोग कश्मीरी से मुक्ति ही चाहते हैं, तभी तो उसे धीरे–धीरे सार्वजनिक जीवन–प्रशासनिक, वित्तीय, वैज्ञानिक क्षेत्रों–से बहिष्कृत किया जा रहा है और उर्दू को लोगों पर थोपा जा रहा है उर्दू को कश्मीरी पर इस हद तक प्राथमिकता दी जाती है कि लोग लोकप्रिय शब्दों को भी भूलते जा रहे हैं। कश्मीरी खार के बदले अब इसके उर्दू रूप खिरवार और व्यथ के बदले झेलम को ही आम बोलचाल में प्रचलित करवा दिया गया है। कश्मीरी नाममात्र के लिए ही राज्य की सरकारी भाषा है। कश्मीरी भविष्य में भी अपने बूते पर राज्य की भाषा न बन पाए इसके लिए उसका स्वरूप ही बिगाड़ दिया गया है। फिर कश्मीरियत का नारा देकर आंदोलन चलाने वाले किस कश्मीर की बात कर रहे हैं? यह तो सब जानते हैं कि उनकी कश्मीरियत से मतलब हर तरह की भारतीयता से मुक्त कश्मीर है जिसमे गैर–मुस्लिम कश्मीरी लोग भी शामिल न रहें, लेकिन ऐसा लगता है कि कश्मीरी के इतिहास, साहित्य के साथ वे उसकी पुश्तैनी भाषा को भी कुर्बान करने पर तुले हुए हैं। इस कश्मीरियत का कश्मीर से कोई वास्ता नहीं है, यह तो उस अंतर्राष्ट्रीय वहाबी इस्लामी अभियान का ही नारा है जिसमें वह सब बातें या परंपराएं गुनाह हैं जो इस्लाम की उस धारणा से मेल नहीं खाती। इसलिए कश्मीरी भाषा को बचाए रखने का उत्तरदायित्व भी उन कश्मीरियों के ऊपर ही आता है जो अपने इतिहास, अपनी संस्कृति और जीवन शैली की बलि चढ़ाने के लिए तैयार न होने के कारण निर्वासन का दण्ड भोग रहे हैं। इस धरोहर को संभालना हमारी नियति है और कर्तव्य भी।

लेखक राष्ट्रीय स्तर के वरिष्ठ पत्रकार हैं।
संपर्क – 301–रमा अपार्टमेंट, से.–11 द्वारका न. दिल्ली

प्रो. चमन लाल सप्रू



मोनियर विलियम्स ने अपनी उल्लेखनीय पुस्तक Modern India and Indians में लिखा है- "कश्मीरी पंडित अपने ढंग की एक भिन्न जाति है, जो कश्मीर में अति प्राचीन एवं प्रथम बसने वाली विशुद्ध आर्य प्रजाति के लोग हैं।" जार्ज कैम्पबेल के अनुसार- "कश्मीरी ब्राह्मण आर्यो की श्रेष्ठ नस्ल हैं। इनका शरीर विन्यास-गौर वर्ण एवं सुडौल सुंदर शरीर रचना और किसी अन्य जाति के खून की मिलावट से सर्वथा मुक्त है।" थाम्पसन के अनुसार आर्य लोग बड़े-भाल एवं छोटी नाक वाले गोरे वर्ण वाले थे। उनके वर्तमान प्रतिनिधि (वंशधर) आज कश्मीर में मिलते हैं।

भारतीय संस्कृति को कश्मीरी पण्डितों का योगदान

कश्मीरी ब्राह्मण उपाख्य पंडित हिमालय की गोदी में बसी कश्मीर घाटी के अन्य जातियों से भिन्न कुछ भिन्न रक्त परम्पराओं और चिन्तन के लोग हैं। मोनियर विलियम्स ने अपनी उल्लेखनीय पुस्तक Modern India and Indians में लिखा है– "कश्मीरी पंडित अपने ढंग की एक भिन्न जाति है, जो कश्मीर में अति प्राचीन एवं प्रथम बसने वाली विशुद्ध आर्य प्रजाति के लोग हैं।" जार्ज कैम्पबेल के अनुसार– "कश्मीरी ब्राह्मण आर्यो की श्रेष्ठ नस्ल हैं। इनका शरीर विन्यास–गौर वर्ण एवं सुडौल सुंदर शरीर रचना और किसी अन्य जाति के खून की मिलावट से सर्वथा मुक्त है।" थाम्पसन के अनुसार आर्य लोग बड़े–भाल एवं छोटी नाक वाले गोरे वर्ण वाले थे। उनके वर्तमान प्रतिनिधि (वंशधर) आज कश्मीर में मिलते हैं। विख्यात इतिहासकार पी.एन.के. बामजई के अनुसार– "यह निश्चित है कि कश्मीर के आर्य प्राचीन समय में सरस्वती नदी के तट पर बसे जनसमुदाय का ही भाग हैं। जब उक्त नदी ने अपनी दिशा में परिवर्तन किया और यह सूख गई तो ये लोग कश्मीर में आकर बस गए।"

इस प्रकार कश्मीरी ब्राह्मणों के पूर्वजों ने प्रकृति की इस रम्य स्थली को ज्ञान की स्थली बनाया। संस्कृत साहित्य का अध्ययन करने के पश्चात हम इसी निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि कश्मीर का संस्कृत बाङ्मय और भारतीय संस्कृति को उल्लेखनीय अवदान रहा है।

इतिहास लेखन में कश्मीर का स्थान सर्वोपरि है। कल्हण पण्डित रचित राजतरंगिनी (1148 ई.) ने आरम्भ से बारहवीं शताब्दी तक का इतिहास लिखा। तदनन्तर इस क्रम राजतरंगिणी शृंखला को जोनराज, श्रीवर, प्राज्ञभट्ट और शुक ने सोलहवीं शताब्दी के अन्त तक पूरा किया। डोगरा शासन काल में महाराजा गुलाब सिंह से लेकर महाराजा हरि सिंह तक की राजतरंगिणी प्रो. गोविन्द राज़दान दे लिखी। उपर्युक्त इतिहास ग्रंथो से न केवल कश्मीर नरेशों तथा उनके समय की विशद जानकारी मिलती है अपितु भारत देश के अन्य भागों के घटनाक्रमों पर भी जानकारी प्राप्त होती है।

काव्यशास्त्र विषयक सिद्धांतों के प्रतिपादन में कश्मीर के विद्वानों का विशेष स्थान है। अलंकार सम्प्रदाय के प्रवर्तक आचार्य भामह (काव्यालंकार), रीति संप्रदाय के प्रवर्तक आचार्य वामन (काव्यालंकार सूत्रवृत्ति), ध्वनि सिद्धांत के प्रवर्तक आनन्दवर्धनाचार्य (ध्वन्यालोक), वक्रोक्ति सम्प्रदाय के प्रवर्तक आचार्य कुन्तक (–वक्रोक्ति जीवित), औचित्य सम्प्रदाय के प्रवर्तक आचार्य क्षेमेन्द्र (औचित्य विचार चर्चा।) इसके अतिरिक्त अलंकार सार संग्रह के प्रणेता–आचार्य उद्‌भट्ट, काव्यालंकार के रचयिता–आचार्य रुद्रट, काव्य प्रकाश के प्रणेता–आचार्य मम्मट, अलंकार सर्वस्व एवं साहित्य–समीक्षा के रचयिता आचार्य रुय्यक, व्यक्तिविवेक के रचयिता–आचार्य महिम भट्ट आदि।

भरत मुनि के नाट्यशास्त्र पर आचार्य अभिनव गुप्त ने अभिनव भारती नाम से इसकी विशद टीका लिखी।

वास्तुकला कश्मीर में हिंदू शासन काल के समय बने प्राचीन अनुपम मन्दिरों के स्मारक आज भी उनकी

भव्यता का आभास कराते है। इनमें विश्व प्रसिद्ध मार्त्तण्ड मन्दिर अवन्तेश्वर मन्दिर (अवन्तिपुर) पट्टन और परिहास पुर के मंदिर आदि असंख्य मंदिरों के साथ विद्यापीठ तथा पुस्तकालय होते थे। इनका संचालन कश्मीरी विद्वान ब्राह्मणों के हाथ में होता था। इन सभी अवशेषों का उल्लेख पंडित रामचन्द्र काक की विश्वविख्यात पुस्तक Ancient Monuments of Kashmir में सचित्र सविस्तार दिया गया है। वास्तु शिल्प की दृष्टि से कश्मीरी ब्राह्मणों की देखरेख में बने सभी भव्य मन्दिर विश्व की अमूल्य धरोहर है। खेद है कि उनकी यथोचित देखभाल ताजमहल, लालकिला या जामा मस्जिद दिल्ली की भांति नहीं हो रही है।

उपर्युक्त सभी मन्दिरों में प्रतिष्ठित मूर्तियाँ कश्मीरी कला की अनुपम धरोहर हैं– जो या तो भग्न अवस्था में संग्रहालयों में हैं– या तो किसी किसी मन्दिर में सुरक्षित हैं। अवन्ति स्वामिन मन्दिर की एक ऐसी ही भव्य मूर्ति श्रीनगर के राज परिवार के निजी गदाधर मंदिर में मौजूद है।

इसी प्रकार कश्मीरी ब्राह्मण चित्रकारों का भी बहुत बड़ा योगदान रहा है। इस्लामी शासन के समय अनेक कश्मीरी पंडित चित्रकार हिमाचल प्रदेश के पहाड़ी क्षेत्रों में बस गए। पहाड़ी चित्रकला अथवा बसोली पेंटिंग्ज़ के नाम से प्रसिद्ध ऐसी दुर्लभ कलाकृतियाँ कश्मीरी ब्राह्मणों की तूलिका से ही बनी है।

इस्लामी शासन काल में कश्मीरी ब्राह्मण अपनी संस्कृत भाषा के साथ–साथ राजभाषा फारसी में भी पारंगत हो गए। अनेक विद्वानों ने मुसलमानों की धार्मिक भाषा अरबी में भी दक्षता प्राप्त की। कुछ विद्वानों के अनुसार हमारे वंश का सप्रू नाम इसलिए पड़ा क्योंकि सेह–परू अर्थात् तीन भाषाओं के पण्डित होने के कारण। वह थीं संस्कृत, फारसी और अरबी।

कश्मीरी पण्डितों में पण्डित बीरबल काचरू द्वारा रचित बहरे–तवील फारसी साहित्य का अनमोल ग्रंथ है। इसी प्रकार उर्दू साहित्य को सम्पुष्ट करने में कश्मीरी पंडितों का अद्वितीय योगदान है। एक विख्यात उर्दू प्रोफेसर ने मुझसे कहा था यदि उर्दू साहित्य से कश्मीरी पंडितों द्वारा रचित साहित्य को निकाल दिया जाए तो मा सिवाय ग़लिब इक़लाब, हाली और मीर आदि चन्द एक शोरा के बग़ैर उर्दू अदब में क्या रखा है?

उर्दू अदब में जिन कश्मीरी पण्डित साहित्यकारों का नाम सर्वोपरि है वे हैं– पण्डित रतन नाथ दर 'सरशार', पंडित ब्रज नारायण "चकबस्त", पण्डित दया शंकर "नसीम" पंण्डित ब्रजमोहन दत्तात्रेय "कैफी", पण्डित आनन्दनारायण मुल्ला (मल्ला) पण्डित गुलज़ार देहलवी आदि आदि। वर्ष 1926 में पण्डित (सर) तेजबहादुर सप्रू के निर्देशन में "बहार–ए–गुलशन –ए–कश्मीर" दो वृहत खण्डों में लखनऊ से कश्मीरी पण्डितों के उर्दू साहित्य को योगदान पर सचित्र ऐतिहासिक ग्रंथ छपा था।

कश्मीरी साहित्य को लल्लेश्वरी (लल्लद्यद), रूप भवानी, अरनिमाल, परमानंद, कृष्ण जू राज़दान, पंडित ज़िंदा कौल "मास्टर जी", पंडित दीनानाथ "नादिम" का योगदान उल्लेखनीय है।

हिंदी साहित्य में कश्मीरी पंडितो के योगदान का काल सात दशक पुराना है। कवियों में डॉ. शशिशेखर तोषखानी और कहानीकारों में हरिकृष्ण कौल, नाटककारों में पद्मश्री मोतीलाल क्यमू एवं उपन्यासकारों में चंद्रकांता का नाम सर्वोपरि है। चंद्रकाता को हिंदी जगत का सर्वोच्च "व्यास–सम्मान" मिला है। पत्रकारिता में हिन्दी दैनिक जनसत्ता के उपसम्पादक जवाहर लाल कौल, दैनिक "कौमी आवाज" (उर्दू) के मुख्य सम्पादक मोहन चरागी इंडियन एक्सप्रेस के संपादक एस. सप्रू नेशनल हेराल्ड के संपादक एं. एन. दर हिन्दुस्तान टाईम्स के एम. के. धर, और एम. के. तिकू, आकाशवाणी के समाचार सम्पादक– मनोहर त्रकरू एवं जी. एन. रैना आदि। इन पंक्तियों के लेखक ने हिन्दी में "कश्यप" "सतीसर" का कश्मीर से संपादन किया और विस्थापन के बाद "कोशुर समाचार" का संपादन करके कश्मीर की हिन्दी प्रतिभा को आगे लाने में अपना कर्तव्य निभाया है। हिन्दी कश्मीरी संगम ने अपनी पत्रिका (कश्मीर संदेश) का मुख्य सम्पादक भी इन पंक्तियों के लेखक को ही चुना।

राजनीति में पंडित जवाहर लाल नेहरू, श्रीमती इंदिरा प्रियदर्शिनी, पण्डित (सर) तेजबहादु सप्रू, पण्डित कैलाशनाथ काटजू, पण्डित मोतीलाल नेहरू, पण्डित हृदयनाथ कुंजरू, पण्डित दुर्गा प्रसाद दर की महत्वपूर्ण भूमिका है।

फिल्मी दुनिया में चन्द्र मोहन, प्रेम अदीब, एक. के. हंगल, सप्रू तथा अनुपम खेर ऐश्वर्या राय बच्चन का नाम लिया जा सकता है।

अंग्रेजी शासन में कोलकता हाई कोर्ट के प्रथम मुख्य न्यायाधीश जस्टिस शम्भुनाथ पंडित थे।

बहुत कम लोग जानते हैं– "सारे जहाँ से अच्छा हिंदुस्तान हमारा" के गायक महाकवि इक़बाल भी कश्मीरी ब्राह्मण थे और उन्हें इसका गर्व था। ऐसा उन्होंने अपनी पुस्तक में लिखा है– "मैं सप्रू खानदान का हूँ और मुझे कश्मीरी ब्राह्मण होने का गर्व है।" उनके पड़दादा ने एक मुस्लिम सुंदरी के प्रेमपाश में पड़कर इस्लाम धर्म स्वीकार किया था।

सम्पर्क :– *13–बी, ई–3, शताब्दी विहार सेक्टर–52 नोएडा 201307 मो. 9871481177*



डॉ. कुंदनलाल चौधरी की चार अंग्रेज़ी कविताएं



रूपांतर : डॉ. रतन लाल शान्त

मेरा ईमान नहीं बदल सका

बेदर्दी से
पहले मुझे छुरा घोंपा
कितने जाड़ों पहले
और अब जो पड़ा हूँ विस्थापन में

ढूंढ ढूंढ कर मुझ से मिलने आए हो
अब मेरे हाथ थामना चाहते हो

कस कर मुझे गले लगाना चाहते हो
बेकरार हो कि जाहिर कर दो मुझ पर अपने राज़
विगत सात बरसों में जो जुनून छाया था
उस पर मुझ से बात करो, जी खोल कर
अपनी और मेरी दोनों की पीड़ा पर
आंसू के दरिया बहाओ.........

मैं खुद को बह जाने नहीं देता, रोकता हूँ
मगर सिर्फ एक क्षण के लिए
खुद को तुम से पूरा काट देने की मेरी अखंड शपथ

देखते ही देखते टूट जाती है
खुद को बस में रख नहीं पाता हूँ

जब तुम्हारी आँखों की नमी देख्ता हूँ
इन में तुम्हारी निश्शब्द भाषा पढ़ता हूँ
भाषा खेद की, पश्चाताप की और प्रायश्चित की

मेरी खामोशी टुकड़े टुकड़े हो बिखर जाती है
हम एक दूसरे की बाहों में जकड़ जाते हैं
जैसे मन्त्र मुग्ध होकर समाधि में खो गए हों।

तुमने कह दिया जो कहने आए थे
एक लंबी कुदान भरी और भर दी दरार सात साल चौड़ी

कूद कर तुम वहाँ पहुँचे
जहाँ मेरा मन सब कुछ भुला चुका है
समो चुका है सब कुछ
हाँ तुम नहीं थे जिसने छुरा घोंपा मुझे
असल में वह हिंसा का एक नया मजहब था
जो नफरत से और असहनशीलता से पैदा हुआ था
मगर तुम्हारा ईमन नहीं बदल सका
जिस तरह सात बरस पहले
तुम्हारी हिंसक मुद्रा नाकाम हुई थी
मेरा ईमान बदलने में।

बढ़ा मौत का दाम

घाटी से मेरा दोस्त मिलने आया है
उसका कहना है–
वहाँ लोग मरने को आतुर हैं
क्योंकि मौत में बड़ा फायदा है
जो आदमी शिकार होता है
क्रॉसफायर में या फिर हिरासत में भी
या मौत जिसे मिलती है
आतंकवादियों के हाथों,
बड़ी विरासत छोड़ जाता है:

एक लाख नगद, रिश्तेदार को नौकरी
विधवा को आजीवन पेंशन
और जो हो जाएँ अनाथ
उन्हें गुज़र बसर के लिए पूरा खर्चा,
जब तक बड़े हो जाएँ।

मेरे दोस्त का कहना है–
कि पुलिस वालों की मौत पर लगे दाँव का दाम
अब एक लाख से बढ़कर पांच लाख कर दिया गया है
और बोनस–वो अलग।
क्योंकि वह केंद्रीय सरकार देती है
उदारता के साथ राहत के तौर पर

बड़े स्वार्थ हैं निहित इन दिनों मृत्यु में
घाटी में
मुझ से छूटी, मेरी खोई जन्नत में
ऐसा मेरे दोस्त का कहना है

स्वर्ग फिर रचने का उत्साह

प्रभु
उन्होंने मुझे जिलावतन किया है
उन्होंने मेरी सारी जाति को जिलावतन किया है

प्रभु
मुझे तुम से दूर काट फेंक दिया गया है
जिलावतनी के सन्नाटे में पटक दिया गया है

जिंदगी को हम खानाबदोशें की तरह ढो रहे हैं
जूझ रहे हें परती ज़मीन से वीरानों में
जूझ रहे हैं कड़कड़ाती बारिशों से

जब ओले धड़धड़ाते हैं
गरजते हैं जब धूल के तुफान
जाड़ों की रातों में किटकिटाती हैं हड्डियां
पसीनो से तर गर्मिया बदबू में डुबो देती हैं
और सपोलो के खड्डों में

और बिछुओं की मांदों में.......

शिकारी कुत्ते हमें लपकते हैं
चीलों की शिकारी नज़रें घूरती रहती है
हमारी धीमी मौत के नाच में
शामिल हो जाते हैं

मकड़े, चींटिया, मच्छर।
प्रभु
हम फिर भी ज़िंदा हैं

कहीं बचा है अंश आस्था का
और विश्वास का कि तुम हमारे भीतर कहीं मौजूद हो
विश्वास हमें विरासत मे मिला, जिसे साथ ले आए हैं।
और साथ ले जाए हैं, तुम्हारी मूरत, तुम्हारे चिन्ह,
तुम्हारी छवियाँ और हमारे साथ है

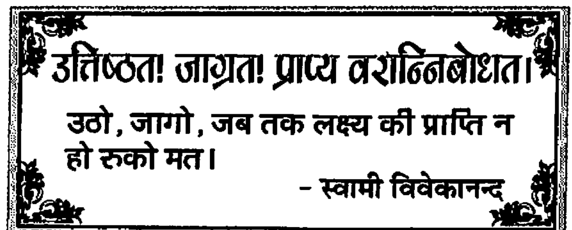
अपनी खोयी स्वर्ग भूमि को फिर रखने का उत्साह
यहाँ फिर गढ़ रहे हैं हम अब तारों की प्रतिमूर्तियां
खड़े कर रहे हैं देवालय ज्येष्ठा के, ज्वाला के,
राज्ञा और शारिका के
लल के और रूपा के
सर्वव्यापक शिव के
नए नए देवालय!

गर्भगृह

तोड़ दे मुझे
कट्टर जुनूनी
लाखों टुकड़े कर दें मेरे
हर टुकड़े से
खड़ा होगा मेरा नया आकार
और मैं संपूर्ण बनूंगा

कभी किसी पहाड़ से या नदी के तल से
तुम कोई कंकड़ या पत्थर या सीपी उठाओ
अटल निष्ठा के साथ
उसे चौकी प रखो
तो वहीं तीर्थ बन जाएगा
और हर तीर्थ में उभरुँगा मैं साकार
क्योंकि मैं वह हूँ
जिसका अपहरण नहीं किया जा सकता
न चेहरा बिगाड़ सकता है कोई
न पूरी तरह मिटा ही सकता है।
होंगे वो मज़हबी जुनूनी, वो मूर्तिभंजक
जिनके हैं लंबे हाथ
दूर दूर तक जिनकी है पहुँच
पर पहुँच कभी नहीं सकेंगे, कभी भी मेरे मन के भीतर
मेरे मन से ज्यादा सुरक्षित कुछ भी नहीं हो सकता
यह एक सच्चे अनुरागी के मंदिर का गर्भगृह है

'क्षीर भवानी टाईम्स', जम्मू से साभार



डॉ. जिया लाल हण्डू



जब से संवेदनशील एवं सात्विक भावमयी सूर्या ने धर्मपाल का हाथ थामा था, तब से वह यही सोच रही थी कि पति गृह में उसे विवाह के पश्चात् अपार प्रेम मिलेगा और उसका वैवाहिक संबंध खिली धूप की तरह हसीन होगा किन्तु यह सब कुछ उसका एक स्वप्न-मात्र था।

उमरिया ढोयी सहते–सहते

नारी की चन्दन–सदृश शीतन एवं मधुमासमयी प्रकृति सदा से ही विवश होरक पुष्प की भाँति शूल की चुमन–सम विकृति को सहन करती आ रही है। जिजीविषा के लिए उसे सब–कुछ गले लगाना ही पड़ता है क्योंकि वह पंख पसार कर उड़ने का साहस नहीं कर सकती चाहे उसे मृंगी का जीवन ही क्यों न जीना पड़े।

किशोरी पुत्री सूर्या की माँ सुनन्दा अब वयोवृद्ध हो चुकी थी। उसे ऐसा प्रेम कभी प्राप्त नहीं हुआ जो विश्वास की ऊष्मा पाकर पुष्पित–फलित होते हुए जीवन–उद्यान को अपनी संपूर्ण महक से आनन्दमय बना दे। वह गठरी–सी बैठी रहती और अकेलाई उसे खा जाती। दीवारों एवं छतो में कैद वह इस वृद्धावस्था में अपने बीते यौवन के क्षणों को स्मरण करके सदा सिहर उठती। अधिक पढ़ी–लिखी नहीं थी वह, फिर भी लोक–गीतों को गाते–गाते उसका संपूर्ण जीवन बीत चुका था। अत्यन्त व्यवहार–कुशल थी वह एवं निष्णान्त भी। सुपुत्री सूर्या उसकी सेवा–सुश्रूषा, सहृदयता एवं सुविज्ञता से करती रहती। कभी प्यारी माँ, कभी मम्मी और कभी अम्मा के प्यारे–प्यारे शब्दों से संबोधित करके उसके मुँह में कौर डाल–डाल कर अघाती नहीं थी। सुनन्दा धीरे–धीरे वह सब निगल जाती क्योकि उसकी दंत पंक्ति बाहर आ चुकी थी।

सुनन्दा के पति श्रीधर का प्राण–पंछी अस्थि–पिंजर से तभी उड़ गया था जब सूर्या का जन्म हुआ था। उस समय सभी चेहरों पर ऐसी उदासी छा गई थी जैसे एक ही मिलता–जुलता चेहरा नज़र आ रहा हो। लोग लांछन लगाते हुए कहते, "जन्म लेते ही बेटी अपने बाप को खा गई! भूतनी है यह भूतनी! इस मनहूस से हमारा क्या काम!" कोई वातावरण में ये शब्द उछाल कर कहता "यह लड़की गंड़मूल में उत्पन्न हुई है, न जाने आगे क्या गुल खिलाएगी।"

माँ सनुन्दा अपने पड़ोसियों एवं संबंधियों के इन बाण–सम कटु वचनों को गम के आँसुओं में छिपाकर सांत्वना पूर्वक कह देती, जीवन–मृत्यु एक दैव लीला है, उसे कोई टाल नहीं सकता। देर–सवेर सब ने इस शरीर को त्यागना है। सच्चाइयों से मुख मोड़कर व्यक्ति कब तक अपने दामन को बचाता रहेगा। हमारे लिए उचित है कि हम इस भ्रांति को त्याग दें। आखिर सूर्या मेरी आत्मजा है। मेरा प्राण है। उसके विषय में ऐसा सोचना भी पाप है।"

पति की मृत्यु के पश्चात् सुनन्दा की प्रत्येक पूर्णिमा काली अमावस्या मे बदल चुकी थी जिजीविषा के लिए उसने वैसाखियों के जिस साधन का आश्रय लिया था वह अब खिसक चुका था। अभी उसके सहारे उसने कुछ और आगे बढ़ना था। मन में उदित कई आकांक्षाओं की पूर्ति करनी थी किन्तु पति की मृत्यु से उसका जीवन खोखला हो चुका था। उसके रंग–मंच पर एक स्याह पटाक्षेप हो चुका था। ऐसा लग रहा था जैसे उसके प्राण मृत्यु के साथ लड़ रहे हों।

नियति का संचालन स्वाभावानुसार होता है। न कभी सूर्य शीतलता और न ही कभी अमावस्या गर्मी प्रदान करती है। सुनन्दा को अपनी सुपुत्री सूर्या के अनागत वैवाहिक जीवन की चिन्ता सताती रहती थी। जब वह यौवन के संगमस्थल पर पहुँच चुकी थी उसके लिए वर ढूँढ़ते हुए उसके नेत्रों की ज्योति भी खो गई थी। बड़े प्रयत्न से नौका मंझधार से बाहर निकाल लाती किन्तु साहिल तक पहुँचते–पहुँचते ही न जाने कहाँ डूब जाती। उसे सदा यही आशंका सताती रहती कदाचित् उसका जीवन–दीप अकस्मात् बुझ न जाए और उस की तमन्ना उसके साथ ही बुझ जाए तब क्या हो!

एक दिन सूर्या उदास होकर राधाकृष्ण की मूर्त्ति के सामने खड़ी प्रार्थना कर रही थी। चिंतन–मनन करते हुए इस संकल्प में खो गई थी, यदि राधा को कृष्ण की उपलब्धि न हुई होती तो क्या हेता। तभी उसके कानों में माँ सुनन्दा का यह स्वर गूँज उठा, "कहाँ हो सूर्या, शीघ्र मेरे पास आओ"। सूर्या माँ की ओर तीव्रता से कदम उठाती हुई उसके सामने खड़ी होकर सिर झुकाकर पूछने लगी, "मा! क्या बात है। कुछ उपस्थित नारीयों के सामने माँ ने कहा, भगवान् ने हमारी नौका को साहिल के पास पहुँचा दिया है। उसके न्याय में देर अवश्य है, अन्धेर

नहीं।" इतना कहते ही उसे खांसी ने आ घेरा और सूर्या उसके उपचार में लीन हुई। सुनन्दा आश्वस्त थी कि अब उसकी तमन्ना पूर्ण होगी।

तिलक की रस्म पूरी हुई और विवाह के दिन निकट आने लगे। सुनन्दा उकडूँ घूम–फिर कर सबकों निर्देश देती कि कहाँ क्या करा है। कौन–सी वस्तु कहाँ सजानी है और किस वस्तु को कहाँ से हटाया जाना है। परम्परागत ढंग से अतिथियों का स्वगत कैसे करना है ताकि प्रथाओं एवं मान्यताओं के पालन के साथ–साथ विवाह संस्कार सम्पन्न हो जाए। कोई भी कोर–कसर न रह जाए इसके लिए सुनन्दा अत्यंत सतर्क एवं सावधान रही।



आखिर विवाह का दिन उपस्थित होने पर सब–कुछ यथासंगत रहा। तारों की छाया में डोली ससुराल पहुँची जहाँ उसका स्वागत मंगल–गान के साथ हुआ। अब घर में एक नया चेहरा आया था इसलिए सब खुशी में झूम रहे थे 'मधु में मिठास' घुल–मिल गया था। सब ने वधू का स्वागत अत्यन्त स्नेह–प्रेम से किया। उसने आमंत्रित लोगों से आशीर्वाद प्राप्त किया।

जब से संवेदनशील एवं सात्विक भावमयी सूर्या ने धर्मपाल का हाथ थामा था, तब से वह यही सोच रही थी कि पति गृह में उसे विवाह के पश्चात् अपार प्रेम मिलेगा और उसका वैवाहिक संबंध खिली धूप की तरह हसीन होगा किन्तु यह सब कुछ उसका एक स्वप्न–मात्र था। पति का स्वभाव देखकर वह समझ गई थी कि खामोशी के साथ उसके साथ जीवन–यापन करना ही श्रेयस्कर होगा, चुपचाप सब–कुछ सहन करने मे ही भलाई होगी क्योकि स्वभावतः उसका पति प्रश्नाकुलता से संकोच करता था।

धर्मपाल के रहन–सहन की जीवन शैली–अत्यन्त ठाठ–बाठ वाली थी। वह सवेरे घर से आफ़िस चला जाता। और वहाँ से पाँच बजे वापस आकर निर्देश देते हुए चिल्लाता "सूर्या! तुम कहाँ हो। तुम तो जानती हो कि दफ़्तर से आने का मेरा समय यही होता है।" सूर्या! बिना कुछ कहे एक मधु प्याला टेबुल पर रखने के पश्चात् वहीं खड़ी हो जाती। "देखो सूर्या! मैं इसलिए पीता हूँ क्योंकि दिन–भर दफ्तर में कैद रहता हूँ। वहाँ के अन्धेरे में जिन्दगी की बिसात पर छल–कपट की गोलियाँ बिछाता रहता हूँ। अनिच्छा से सब कुछ कर रहा हूँ। मैं यह सब कुछ। उस सब को मैं घर आकर भूल जाना चाहता हूँ मगर पैरों में पड़ी बेड़ियों को कैसे दूर फैकू? सब कुछ इच्छित–अनिच्छित करना पड़ता है कहाँ मिलता है तुम्हारे साथ बात करने का समय।" वह मदहोशी की अवस्था में कहता।

"सूर्या! इस घर में आकर तुम्हें देखते हुए मधुमास की तरह मेरे जीवन मे बहार आती है। तुम्हें देखकर सब गम भूल जाना चाहता हूँ मगर कमबख्त यह मेरा पीछा छोड़ता नहीं।" धर्मपाल ने जाम को होठों से लगाते हुए गले से उतार कर कहा। सूर्या चुप–चाप सोचने लगी, "आखिर इसकी बेबसी का कारण क्या है?वेतन की अपेक्षा यह अधिक ठाठ–बाठ क्यों?इसका यह जीवन एक प्रदर्शन हीं तो है और क्या है?तभी धर्मपाल मदहोश होकर कहने लगा, "सूर्या! तुम मेरी प्रेरणाधारा हो। तुम्हारी याद में भी यह मनहूस मायूसी जाती ही नहीं, मधुममक्खी की तरह पीछा करती रहती है। तुम्हारी संगति में रहकर मुझे हर पल, हर क्षण दीवाना बना देता है। तुम्हें देखकर मुझे जो नशा छा जाता है वह किसी स्कॉच, विस्की, ठर्रे या रम से कम नहीं होता। सूर्या चुपचाप सुनती रहती क्योंकि वह जानती थी कि ऐसे अवसरों पर चुप रहना ही श्रेष्ठ होता है और होठों पर आए शब्द स्वतः ही वाष्प हो जाते है। सूर्या उसकी अव्यवस्थित मनः स्थिति को देखकर असमंजस मे सोचने लगती "घर में इतना ठाठ–बाठ क्यों लगता है?किसी सेठ साहूकार का मकान तो है नहीं,

आखिर यह रुपया–पैसा कहाँ से आता है?कोई ज़मींदारी या दुकानदारी भी नहीं। प्रत्येक जीव चादर देखकर ही तो पांव पसारता हैं इतनी संपूर्ण सामग्री कहाँ से आई, मैंने जीवन में अभाव ही अभाव देखा है।, फिर यह सम्पत्ति किसकी देन है?यह सोचते–सोचते वह अनमनी–सी हो जाती और उसे कोई अलक्ष्य भय कंपा देता।

धर्मपाल प्रति रात घर से गायब हो जाता। सूर्या का जीवन एक निर्वाक् कैदी की भाँन्ति था। उसकी आशंकाएं उसकी आस्थाओं को सदा डाँवाडोल कर देती। यही सोच आती कि वह रात–रात भर कहाँ बिना कहे चला जाता होगा। उस अकेले को भय नहीं सताता होगा क्या?मुझे तो बड़ा डर लगता है। अपनी बात कहे बिना वे कहाँ गए होंगे। अपनों से नाता तोड़ कर कोई ऐसे जाता है क्या?मुझे क्यों वे इस प्रकार रुलाते रहते हैं?अभी विवाह हुए छः मास भी नहीं हुए हैं?कहाँ काफूर हो गई है विवाह के बाद की यह प्रेमानुभूति! इस धुधलके मे मेरा मन आशंकित क्यों हो रहा है?

अभी सवेरा हुआ ही था कि द्वारा पर दस्तक हुई–कपाट खोलते ही सूर्या ने देखा कि बाहर पुलिस खड़ी है। वह सकते में आ गई धर्मपाल हथकड़ियों से जकड़ा पड़ा था। अचम्भित होकर सूर्या ने पूछा–थानेदार जी! यह क्या?

"आज रात धर्मपाल को चोरी करते हुए पकड़ा गया है। घर की तलाशी लेने आए हैं।" थानेदार तलखों से कहा।

यह सुनते ही गुमसुम सूर्या भीतर तख्तपोश पर पसर गई। चोरी का संपूर्ण माल ज़ब्त करके धर्मपाल के साथ पुलिस वहाँ से चली गई।

सूर्या होश में आ गई। घर का सारा चोरी का माल नदारद था। बाहर इकट्ठी हुई भीड़ मे से वातावरण में किसी के ये शब्द गूंज उठे– "वास्तविकता अब सामने आ गई है बाहर से टीपटाप और भीतर से कालित्व लेकर विहंसता दीपक!" किसी और के ये शब्द आकाश में उछल पड़े, "आज के समाज को प्रदर्शन, खोखले स्टेटस एवं प्रदर्शन के मानसिक रोग ने कितना ज़लील कर दिया है"।

सूर्या अब अकेली रह गई थी। पति की गिरफ्तारी उसे कचोट रही थी। वह समझ नहीं पा रही थी किसको दोष दे–दोहरे मापदण्ड को अथवा अपने दुर्भाग्य को। तभी उसे बुढ़ापे से पीड़ित अपनी माँ सुनन्दा की स्मृति आगई यहीं तो अब मुल्ला की दौड़ मस्जिद तक थी। वहाँ पहुँचकर वह उसकी गोद में पसर कर ज़ोर–ज़ोर से आहें भरने लगी।

सम्पर्क : 160, सैक्टर 15–ए
चण्डीगढ़–160015

एक हक़ीक़त



सुरबाला शर्मा

वक़्त–ए–पीरी में मोसम खुशगवार नहीं होता।
ऐश–ओ–आराम हों भीं तो क़रार नहीं होता।।

कितनी हो तसल्ली
आ कर कोई दे जाए।
किसी का भी दिल को
एतबार नहीं होता।।

ज़हन में जो घूमते हैं खास चन्द चेहरे।
हक़ीक़त में उनका कहीं दीदार नहीं होता।।

एक ख़ौफ़ सा रहता है
हर वक़्त ज़िन्दगी में।
ऐसी सूरत में किसी चीज़ से
प्यार नहीं होता।।

जाग कर ही बीतती है लम्बी–लम्बी रातें।
आँखों में कहीं नींद का खुमार नहीं होता।।

ये ऐसा दौर होता है
इनसां की ज़िन्दगी का।
जब अपनों में ही अपनों का
शुमार नहीं होता।।

बस यादें पास रहती हैं गुज़रे ज़माने की।
वक़्त पे तो किसी का इख़्तियार नहीं होता।।

सम्पर्क : सी–60, सैक्टर–ओ, अलीगंज,
लखनऊ–226024

समीक्षायें

शिव सूत्र

भाषा : कश्मीरी
व्याख्याकार : प्रो. मीम, है. ज़फर
मूल्य : रु 300/–
प्राप्ति स्थान : मकान नं. : 8, गली नं. : 6, रोज़ एन्क्लेव, शिव पुरा, (बदामी बाग कैंट) राम मुन्शी बाग, श्रीनगर (कश्मीर) – 190004
मो. : 09419404854
09654869523

प्रो. ज़फर कश्मीर शैव मत के अध्येता हैं। आचार्य वसुगुप्त की अमर कृति शिव सूत्र की व्याख्या कश्मीरी भाषा के करके प्रो. ज़फर ने सर्वसाधारण का उपकार किया है। मान्यता है भगवान शंकर की कृपा से कश्मीर में महादेव पहाड़ के दामन में आचार्य वसुगुप्त को एक विशाल पर्वत पर खुदे हुए इन रहस्यमय सूत्रों को प्राप्त किया था। अनेक शैवाचारियों ने अब तक संस्कृत और हिन्दी में व्याखा करते हुए इन्हें जिज्ञासुओं को सुनाया।

संस्कृत न जानने वाले कश्मीरी समाज के लिए प्रस्तुत कृति एक अमृत कलश है। ज़फर महोदय ने शिव सूत्र की मूल सूत्रों के साथ कश्मीरी व्याख्या को अलग–अलग दोनों लिपियों में प्रकाशित किया है।

आचार्य (स्वामी) लक्ष्मण–जू महाराज की विदुषी शिष्या प्रभादेवी जी ने इस कृति की प्रशंसा करते हुए भूमिका लिखी हैं पुस्तक में वर्णित सरल कश्मीरी भाषा में अनुववाद (व्याख्या) को साधारण पाठक सराहेंगे।

आचार्य क्षोमराज, की शिवसूत्र विमर्शिनी, भट्ट भास्कर की 'शिवसूत्र वार्तिक', डॉ. बलजिन्नाथ पण्डित कृत विस्तृत व्याख्यायें–संस्कृत हिन्दी मे उपलब्ध विद्वत

कोशुर त्रुकमत



शिव सूत्र

वसु गुप्त र्योश

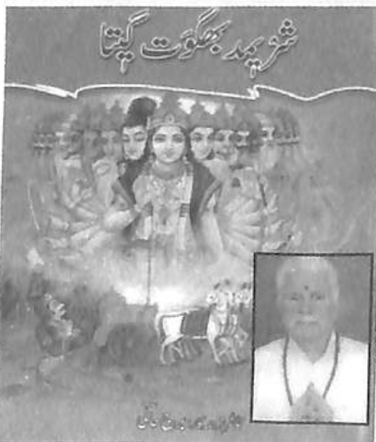


मीम-है-ज़फर

समाज के लिए महत्वपूर्ण व्याख्यायें हैं। किन्तु प्रो. मीम. है. ज़फर द्वारा कश्मीरी जानने वाले पाठकों के लिए एक वरदान हैं ज़फर साहिब का मानना है कि शिव सूत्र–कुल चालिस प्रत्येक कश्मीरी को कण्ठस्थ होने चाहिए वह अपने व्याख्यानों में सूफी कश्मीरी कवियों की पद्यावलियों में उक्त सूत्रों की छाप दिखाते हैं। धन्य हों ज़फर महोदय जिन्होंने चिरप्रतीक्षित कार्य को सुलभ कर दिया।

वसुगुप्त की शिवसूत्र पुस्तक (कश्मीरी) प्रत्येक कश्मीरी परिवार में होनी चाहिए।

–च.ल.सप्रू



श्रीमद् भगवद् गीता

कश्मीरी पद्यानुवाद–रचयिता– ब्रज हाली

गीता के कश्मीरी भाषा में अब तक लगभग आधा दर्जन पद्यानुवाद प्रकाशित हुए हैं। इस श्रृंखला में सुकवि ब्रज हाली का सरल कश्मीरी भाषा में पद्यानुवाद अभिनन्दनीय है। कश्मीरी अनुवाद मूल संस्कृत सहित दोनों प्रचलित लिपियों में है।

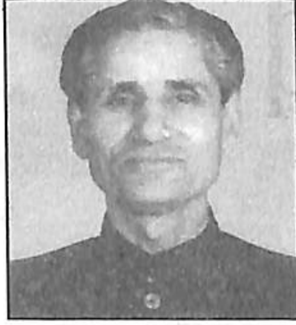
प्राप्ति स्थान : मकान नं. 148, सेक्टर–471–ए, विनायक नगर, मुठी जम्मू

कोशुर रामायण

रचयिता –

अमर शहीद

पं. सर्वदानन्द कौल प्रेमी





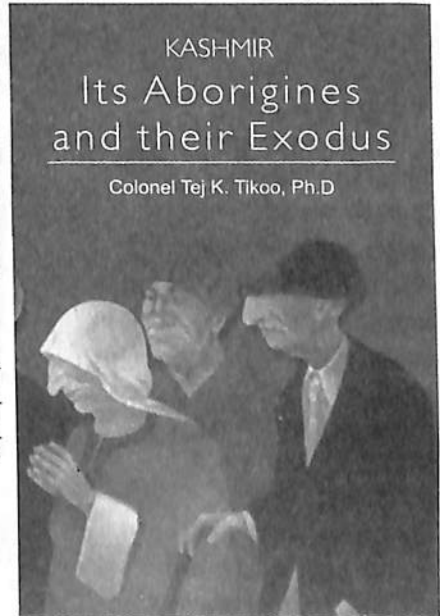
कश्मीरी भाषा में लगभग आधादर्जन रामायण मिलते हैं। इस श्रृंखला में 'प्रेमी' जी का सरल कश्मीरी भाषा में अनुवाद एक अमूल्य कड़ी है। हुतात्मा प्रेमी जी के सुपुत्र राजेन्द्र प्रेमी ने इसे प्रकाशित कर उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि दी है।

प्राप्ति स्थान : ई–172, सरिता विहार,
नई दिल्ली 110076 फोन – 011–29941116

Kashmir Its Aborigines and their Exodus

Colonel Tej K. Tikoo, Ph.D





कश्मीरी पंडितों का 1989–90 में सामूहिक विस्थापन वर्तमान इतिहास की भयंकर त्रासदी है। पाक प्रशिक्षित आतंकियो ने धरती के स्वर्ग कहलाने वाले कश्मीर से चार लाख शान्तिप्रिय देशभक्त कश्मीरी पंडितों को अपनी जन्मभूमि से कैसे निष्कासित किया इसका मर्मान्तक वर्णन किया है कर्नल तिकू ने इस वृहत पुस्तक में। पिछले दिनों पुस्तक का लोकार्पण भारतीय जन प्रशासन संस्थान के सभागार में कर्नाटक के पूर्व राज्यपाल त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी ने किया।

राज्य सभा में प्रतिपक्ष के उपनेता रविशंकर प्रसाद नें इस पुस्तक में वर्णित सामग्री का विवेचन करते हुए पुस्तक को कश्मीर की वर्तमान दशा पर प्रकाश डालने वाली महत्वपूर्ण रचना बताया। आवरण चित्र प्रसिद्ध चित्रकार वीर मुंशी ने बनया है।

पुस्तक का मूल्य रु 895/= है।

पुस्तक के लिए लेखक से सर्म्पक करें।
मो. नं. 09899656400
email : tk_tikoo@yahoo.com

नवांकुर

मेरा अनुभव



मोहिनी पडरू

बार बार खयाल आता है
मेरे मन में
कितने कष्टों से संभाला है
हमने अपनी परछाई को
यह परछाई तो आखिर
अंश है हमरी ही
ऊँगली पकड़ कर
चलना सिखाया है हमने
उन को संभालने के लिये गिरने का बहाना करते थे
फिर भी हँसते थे हम
कभी गिरते थे कभी सम्भलते थे
चोट खाते थे वह दर्द होता था हमे
उन्हें बोलना सिखाते सिखाते
खुद बोलना भूलते थे हम
उन की तोतली भाषा में
खुद तोतले बनते थे हम
कभी प्यार से कभी गुस्से से
हम उन्हें सिखाते थे
बस इसी चाह से
कब वह आगे निकलेंगे हम से
कभी हम भूल करते थे
कभी सम्भलते थे खुद
जीना हमने सिखाया
अपने ही अनुभव से
लगता कार्य कठिन है यह
फिर भी पार लगाया हर माँ बाप नें
कर्तव्य निभाया
अपना हर हाल में
अब समय आया
माँ बाप को सँभालने का
क्या संभाल पायगे हम उन्हें
जो पहेले ही संभले हैं
जिन्होंने हमें समझाया है
क्या वह हमसे समझ सकेगें
जब उन्हें सहारे की जरुरत है
क्या हम उनका सहारा बनेगे
चाहते वह भी सहारा
ऊँगली पकड़ने के बगैर
बाजू पकड़ना पड़ता है हमें
जिसे पकड़ना संभव नहीं
कहने को बच्चा और बुजुर्ग
एक समान है
पर है यह केवल
कहने की ही बात
समर्पण है बच्चों में
जब वह होते हैं बच्चे
अहम होता हे बुजर्गों में
गर वह होते हे कितने असहाय
गर्व के साथ समर्पण करना
कोइ दुःख नहीं
गर दुःख है वह है
अपनों को दुखी करना
समर्पण को भूल से भी
मजबूरी न समझना

यह समर्पण नहीं है मजबूरी का
पर अहसान है हम जैसों पर
शक्ति है उन में अभी भी
अपने बल पर जीने की
खिलाडी हैं पुराने
खेल सकगे किसी भी मैदान में
बुजर्गों का समर्पण बच्चों का आधार
मिलजुल कर बनेगी
नई परम्परा
आगे के संस्कार की

संम्पर्क : 411–कैटानिया ब्लॉक, माहागुण मैंनसन,
इन्दीरा पुरम् (गाजियाबाद)



पं. बदरीनारारायण तिवारी अध्यक्ष मानस संगम, कानपुर द्वारा "कश्मीर सन्देश" की सम्पादक डॉ. बीना बुदकी का सम्मान

महाकाली साहित्य संगम नेपाल के अध्यक्ष वीर बहादुर चन्द द्वारा कंचन पुर (नेपाल) में डॉ. बीना बुदकी का अभिनन्दन





रेवेंशा विश्वविद्यालय कटक (ओड़िशा) में आयोजित "भारतीय भाषाओं में राम कथा" संगोष्ठी को सम्बोधित करती हिन्दी कश्मीरी संगम की सचिव डॉ बीना बुदकी



केन्दीय भाषा संस्थान मैसूर एवं अखिल भारतीय कश्मीरी समाज के संयुक्त तत्त्वावधान में सहगल हाल जम्मू में आयोजित त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में (१) प्रो. चमन लाल सप्रू (सत्राध्यक्ष) मध्य मे (२) प्रो. जफर, (३) ए. एन कौल साहिब, (सम्पादक नाद) (४) मोती कौल (अध्यक्ष AIKS), (५) पद्मश्री मोतीलाल क्यमू, (६) प्रतिभागी विद्वत्जन

डॉ. बीना बुदकी सचिव हिन्दी कश्मीरी संगम ने सम्पादकीय कार्यालय 102-ए, एस. जी. इम्प्रशेन सेक्टर-4बी, वसुन्धरा (गाज़ियाबाद-उ.प्र) 201012 से प्रकाशित किया
प्रणव कौल ने विजन क्रिएटिव सर्विसेस, 222, पल्ला पावर हाऊस ओल्ड शेर शाह सूरी रोड़, फरीदाबाद से मुद्रित किया।